ज्योतिष विज्ञान

वर्ष –27 जुलाई, अगस्त, सितम्बर – 2022 अंक–4, 5, 6

प्रधान संपादक : आचार्य जैनेन्द्र कटारा

संस्थान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम
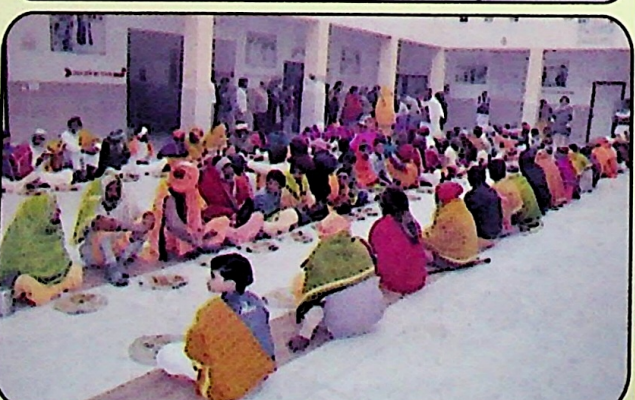
ज्योतिष विज्ञान पत्रिका

समाचार पत्रिका

प्रधान कार्यालय : 44, प्रिया निकुन्ज, आजाद नगर, टोंक रोड, सांगानेर, जयपुर-302029

फोन : 0141-2790810 (संस्थान कार्यालय), मो. 9829055120, 9414052690

जुलाई, अगस्त, सितम्बर - 2022

नोट : यह अनिवार्य नहीं है कि पत्रिका में दिये जा रहे लेखों से सम्पादक की सहमति हो। यह विचार लेखकों के अपने विचार हैं - प्रधान सम्पादक

1. अपरिहार्य कारणों से पत्रिका का प्रकाशन बंद होने पर सम्पादक एवं सम्पादक मण्डल का कोई दायित्व नहीं होगा।
2. समस्त विवादों का न्यायिक क्षेत्राधिकारी जयपुर ही रहेगा।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक मुद्रक : आचार्य जैनेन्द्र कटारा द्वारा जुबली प्रिन्टर्स, जयपुर से मुद्रित करवाकर, 44, आजाद नगर, एयरपोर्ट सर्किल के पास, टोंक रोड़, जयपुर से प्रकाशित

अनुक्रमणिका

।। श्री गणेशाय नमः।।

म 10	9	8	शु 7 श.
11		बु 5 सू.	6 च. रा.
के. 12	2		4 गु
1		3	

गणेशजी की कुण्डली

सम्पादक की कलम से...

अग्र पूजनीय श्री गणेशजी महाराज के संदर्भ में

आचार्य श्री जैनेन्द्र कटारा

(गणेशजी ही क्यों हैं अग्र पूज्य)

गणाध्यक्ष गणपति गौरी नन्दन पार्वती तन्य शिव पुत्र श्री गणेशजी महाराज के चरणों में बारम्बार प्रणाम करते हैं। सभी लोगों को मैं यह बताना चाहता हूं कि हिन्दू सनातन धर्म में 33 करोड़ देवी देवताओं का उल्लेख शास्त्र, पुराण, वेदों एवं विविध संहिताओं में प्राप्त होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है। किन्तु उन सभी देवी देवताओं में केवल श्री गणेशजी को ही हम क्यों पूजते हैं। जैसाकि आप देखते हैं कि हर छोटे या बड़े कार्य में गणेशजी की पूजा सर्वप्रथम की जाती है। गणेशजी एक ऐसे देवता हैं जो मिट्टी के सुपारी के हरीदुर्वा अथवा किसी भी रूप में, किसी भी चीज में बड़ी आसानी से इनको बनाया जा सकता है। जिसमें सर्वोत्तम गणेशजी पारद और श्वेतार्क के माने जाते हैं। इस बारे में आगे उल्लेख किया जायेगा।

अभी यह मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि गणेशजी ही अग्र पूज्य क्यों हैं? विश्व में सबसे ज्यादा महत्व, मान–सम्मान ज्ञान और बुद्धि का होता है। ज्ञान बुद्धि की उपज है। बुद्धि भगवान की देन होती है जो हर देवी देवता और मनुष्य को प्राप्त होती है। किन्तु कौन उस बुद्धि का सद्पयोग करता है और कौन उस बुद्धि का दुरुपयोग करता है यह एक विवादास्पद विषय है, जो अगले अंग में स्पष्ट किया जायेगा।

केवल मैं यह बताना चाहता हूं कि जो देवता या मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग शांतिपूर्वक करते हैं वही सर्वमान्य हैं, इसमें कोई संदेह न है और ना ही हो सकता है। इसी प्रकार से गणेश पुराण और अन्य पुराणों में भी एक छोटीसी कथा प्राप्त होती है कि भगवान शिव के ज्येष्ठ पुत्र कार्तीकेय जोकि देवताओं के सेनापति हैं, यह सर्वविविद है। किन्तु गणेशजी को सर्वमान्य क्यों किया गया?इसके संदर्भ में यह है कि एक समय इन दोनों भाईयों में प्रतिस्पर्धा हुई कि हमें अग्र पूज्य किया जाय जो सर्वप्रथम पूज्य होगा। भगवान शिव ने इन दोनों की बुद्धि परीक्षा के लिए यह निर्णय रखा कि दोनों भाईयों में से जो पृथ्वी की परिक्रमा सबसे पहले करके आयेगा वही अग्र पूज्य माना जायेगा। शिव पार्वतीजी कैलाश पर विराजमान हैं। गणेशजी महाराज जैसाकि उनका स्वरूप का वर्णन है। **वक्रतुण्ड** जिनका पेट बड़ा है, **महाकाय** महान जिनकी काया है, **कोटिसूर्य** करोड़ों सूर्य के समान जिनकी तेजस्वी हैं। **विघ्नेश्वराय** जो समस्त विघ्नओं का नाश करने वाले एवं देवतागणों के अध्यक्ष श्री गणेशजी महाराज का शरीर सबको ज्ञात है।

ऐसे गणेशजी महाराजजी अपनी चूहे की सवारी को ले करके भगवान के सामने उपस्थित हो गये और देवताओं के सेनापति महान बलशाली मयूर का वाहन ले करके उपस्थित हो गये। भगवान शिव के प्रमाणानुसार ओंकार शब्द के

उच्चारण के साथ दोनों की परिक्रमा आरम्भ हुई और जो पहले परिक्रमा दे करके आयेगा वह अग्र पूज्य हो जायेगा। यह शर्त समस्त देवी देवाताओं के मध्य निर्धारित की गयी। सभी देवी देवता कौतूहल इस दृश्य को देख रहे थे कि आज हमारे विश्व में अग्र पूजनीय का निर्णय हो रहा है। कार्तीकेय स्वामी बिना कुछ सोचे समझे ही, ओंकार की ध्वनि होते ही पृथ्वी की परिक्रमा के लिए अपने मयूर वाहन पर सवार हो करके तेज गति से प्रस्थान कर गये।

जबकि गणेशजी महाराज एक क्षण के लिए वहीं खड़े हो करके अपने आत्म चिन्तन, आत्म विवेक से सोचा और निर्णय किया कि **माता पृथ्वी रूपम् च** माता पृथ्वी का रूप है। **लक्ष्मी रूपम् तथैवी च** लक्ष्मी का रूप माता है **ब्रह्माणीम सावत्रीम् च मातृ रूपम् नमोस्तुतै।** उन्होंने बुद्धि से निर्णय किया कि पृथ्वी का सम्पूर्ण स्वरूप माता हमारे सामने विराजमान हैं और दूसरा मन में उन्होंने विचार किया कि **पिता स्वर्गः** पिता ही स्वर्ग है, **पिता धर्मः** पिता ही धर्म है, **पिता ही कर्मम् महान** पिता एक साक्षात् कर्म और भाग्य का स्वरूप है। **पितरों प्रीति महापुण्य** यदि पिता प्रसन्न हो जाते हैं तो **प्रियंताम् सर्व देवताः** सभी देवता स्वतः ही प्रसन्न हो जाते हैं। इन दोनों श्लाकों का उन्होंने मन ही मन अध्ययन किया और कुछ ही क्षणों में प्रसन्न मुद्रा में हाथ जोड़ कर बड़े कोमल अपने पदों से बैडोल शरीर के साथ शिव पार्वतीजी जो दोनों सिहांसन पर विराजमान हैं उनकी सात प्रदक्षिणा और सात परिक्रमा दे करके हाथ जोड़ करके खड़े हो गये और कहा पिताश्री मेरा तिलक करो मैं अग्र पूज्य हो गया। भगवान भोलेनाथ शिव मुस्काराये और कहा गणेशजी तुम तो यहां से हिले ही नहीं तो पृथ्वी की परिक्रमा कहां हो गयी। उन्होंने उक्त श्लोक का उच्चारण करते हुए स्पष्टीकरण किया कि हे–पिताश्री माता ही नहीं, तीनों लोकों का स्रोत, तीनों लोकों की स्वामीनी मां जगत जननी, स्वर्ग और कर्म के स्वरूप आप दोनों मौजूद हैं तो पृथ्वी तो आपके अन्दर समायी हुई है। इस स्थूल पृथ्वी की परिक्रमा तो बल प्रयोग से करते हैं, बुद्धि प्रयोग की क्या आवश्यकता है।

अतः मैं बड़े भाई साहब को प्रणाम करता हूं चूंकि उनके पास बल की शक्ति है और आपके आशीर्वाद से मुझमें बुद्धि की शक्ति है। अब आप स्वयं निर्णय करें कि बल बड़ा है या बुद्धि। तो शास्त्र प्रमाण का निचौड़ यह स्पष्ट है कि दुनिया में ज्ञान ही सर्वोपरि है और सबसे बड़ा है। जोकि ज्ञान की परिभाषा दी गयी है कि **ना चोरहार्यम्** जिसे कोई चोरा चुरा नहीं सकतं **ना भ्रात बाग्यम्** भाई बांट नहीं सकता **न च भारकारी** उसको कोई उठाने में वजन भी नहीं लगता। अतः **ज्ञान धर्म सर्व धनम् प्रधानम्।** तो ज्ञान रूपी धन सभी धन से प्रधान हैं और ज्ञान का जन्म बुद्धि और विवेक दोनों के समन्वय से होता है। जब ये अपनी माधुरी भाषा में सहजतापूर्वक अपने पिताश्री, माताश्री, एवं समस्त देवताओं की व्याख्या की तो भगवान भोलेनाथ मंद–मंद मुस्काराये और खड़े हो करके उनको अग्र पूज्य का तिलक कर दिया। जब सम्पूर्ण तिलक हो गया और गणेशजी महाराज की जय जयकार होने लगी, गगनभेदी जयकारे होने लगे। कार्तीकेय स्वामी देर से पहुंचे और उन्होंने अग्र पूज्य श्री गणेशजी को सिहांसन पर बैठे देखा तो अपने बल

प्रयोग के कारण उन्हें क्रोध आना स्वाभाविक था। अपने पिताश्री से गर्जना करके कहने लगे कि पिताश्री आपने अन्यायपूर्वक निर्णय लिया है। बड़ा तो मैं हूं क्योंकि मैं पृथ्वी की परिक्रमा करके आया हूं, किन्तु भोलेनाथ और मैय्या पार्वती ने उन्हें ज्ञान और बुद्धि की परिभाषा का परिचय देते हुए कहा है—वत्स संसार में जो बुद्धिमान होगा और जो बुद्धि का प्रयोग करेगा वही दुनिया का सबसे बली और अग्र पूजनीय होगा। अतः तुम अपने छोटे भाई श्री गणेशजी को अग्र पूजनीय स्वीकार करें। यद्यपि उन्हें यह बात तत्काल समझ में नहीं आयी और रूष्ट हो करके भारत के दक्षिण भाग में चले गये, जहां पर मुरुगन के नाम से पूजा होती है। अतः यह शास्त्र प्रमाणित दृष्टांत के आधार पर श्री गणेशजी अग्र पूज्य हुए और जब तक सृष्टि रहेगी तब तक अग्र पूजनीय रहेंगे।

अतः श्री गणेशजी महाराज के चरणों में बारम्बार प्रणाम करते हुए सभी पाठकों के लिए मैं यह स्पष्ट कर रहा हूं कि गणेशजी पूजा का अर्थ केवल गणन्त्वा आदि मंत्र और प्रसाद बांटने, हवन आदि से नहीं होता है। गणेशजी पूजने का वास्तविक अर्थ यह होता है कि जो भी कार्य आरम्भ कर रहे हैं उसमें सर्वप्रथम अपनी बुद्धि का परिचय दें कि इस कार्य को हम अपनी बुद्धि—विवेक के द्वारा कैसे सफल बनायें, किस प्रकार से उन्नति के रास्ते पर दिखावें। वही हमारा श्रेष्ठ अभियान, उपक्रम या विधान या कोई भी हमारा व्यापार आदि सफल होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

इसी क्रम में आप लोगों के घरों में जब अनेकों बार पूजा या अनुष्ठान आदि होते हैं तो वहां पर आचार्य महोदय जो व्यासपीठाधीन होते हैं वे पूजा की समाप्ति पर हाथ में चावल ले करके यह स्पष्टीकरण के साथ बोलते हैं कि रिद्धि सिद्धियों के साथ श्री गणेशजी महाराज लक्ष्मी महारानी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, ईष्ट देवता, कुल देवी, कुल देवता, ये हमेशा यहीं पर विराजमान रहें बाकी आये हुए सभी देवी देवता अपने—अपने घरों को चले जायें। यह क्षमा याचना है। इसका अर्थ यह नहीं होता कि देवताओं को विदा कर दिया जाता है। इसका अर्थ यह होता है कि बुद्धि और हमारा विवेक हमेशा जाग्रत रहे और इसी को ही हम फॉकस करें। बाकी अन्य विधान है या अन्य परम्परा है, उनको हमें द्वितीय श्रेणी पर रखना चाहिये।

गणेशजी महाराज की यद्यपि महिमा इतनी है कि एक लेख तो क्या एक वृह्द संहिता लिखने पर भी पूरा नहीं कर सकते। गणेश पुराण में श्री गणेशजी का अनन्त वर्णन है, आप सभी लोग गणेश पुराण का अध्ययन करते होंगे और ऐसा कोई पुराण इतिहास नहीं है, जिसमें गणेशजी का वर्णन नहीं आता हो। अतः सभी लोग श्री गणेशजी महाराज को अग्र पूज्य मानते हुए अपनी बुद्धि और विवेक का संज्ञान दें।

इसी क्रम में गणेशजी महाराज का जन्मोत्सव भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी जिस दिन चित्रा नक्षत्र की युक्ति और वृषभ लग्न में दिन के 12:00 बजे श्री गणेशजी का जन्म हुआ है। इस वर्ष गणेश महोत्सव **31 अगस्त, 2022, बुधवार** को आरम्भ होगा। उसी दिन गणेशजी की स्थापना होती है। महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में विशेष रूप से 11 दिन के गणेशजी का महोत्सव मनाया जाता है। कोई अपनी

श्रद्धा से डेढ़ दिन अथवा पहले दिन और अगले दिन दोपहर तक, कोई तीन दिन, कोई पांच दिन, कोई सात दिन और कोई नौ दिन और ज्यादातर गणेशजी के भक्त 11 दिन के लिए स्थापना करते हैं। इन 11 दिनों के बाद में गणेशजी के विसर्जन की जो एक कुपरम्परा चली आ रही है, यह नष्ट होनी चाहिये। क्योंकि गणेशजी ना कभी विसर्जन होते हैं और ना कभी विदा होते हैं।

केवलमात्र जब भारत देश परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और हमें अंग्रेजों के अत्याचार के कारण सम्पूर्ण भारत में धारा 144 लगी हुई थी। हमारे समाज सुधारक लोक मान्य बाल गंगाधर तिलकजी ने अपनी पहल करके गणेश पूजन के बहाने से उनसे अनुमति मांगी। उस समय अस्त्र–शस्त्रों के आदान प्रदान का मार्ग समुद्र होता था तथा मीटिंग करने का बहाना और इधर भजन कीर्तन चलता रहता था और उधर टिपिकली महाराष्ट्रीयन और साउथ लैंग्वेज में जोकि उस भाषा को अंग्रेज नहीं समझ पाते थे। उनकी उपस्थिति में गणेश महोत्सव होता रहता था और वार्ता चलती रहती थी कि आगे की रणनीति हमारी क्या होगी।

समुद्र में **गणेशजी** को ले जाने का अर्थ विसर्जन नहीं होता था। केवल समुद्र में अस्त्र–शस्त्रों का आदान प्रदान होता था। जो गणेशजी के पेट में रख करके अथवा अन्य किसी माध्यमों से रखे जाते थे। तब से यह परम्परा चली और उसी परम्परा को हम अपने एक निर्वाह के रूप में मान रहे हैं।

अतः सभी लोगों से आग्रह है कि गणेशजी को विसर्जन नहीं करना है। केवल यह प्रार्थना करें कि हे–प्रभु आप हमेशा हमारे साथ थे, हैं और रहेंगे। केवल लोक परम्परा के अनुसार जो विशेष अनुष्ठान के बहाने आपका कलेवर जिसको बोलते हैं मूर्ति। समाज के नजरों में हमने मूर्ति स्थापित की है। उस कलेवर को पंच तत्वों में विलीन करने की परम्परा रही है। केवल गणेशजी को कभी विदा करने की, विसर्जन करने की ना परम्परा थी और ना होनी चाहिये और ना ही भविष्य इसकी पुर्नावृति होनी चाहिये। गणेशजी महाराजजी से प्रार्थना करें कि हे–प्रभु यह सम्पूर्ण वर्ष हमारे लिए मंगलमय हो। जिस प्रकार से भगवान श्री राम जन्म के महोत्सव से पूर्व नौ दिन का अनुष्ठान किया जाता है उसी प्रकार से हमारे गणेशजी यानी बुद्धि का प्रवेश होने के बाद नौ दिन यानी नव निद्धि और समस्त जीवों का आह्वान के रूप में 9 निद्धि और रिद्धि सिद्धि 11 दिन होते हैं। 11 दिन के रूप में गणेशजी का अनुष्ठान मनाया जाता है।

इसी क्रम श्री गणेशजी की स्थापना 31 तारीख को डेढ़ दिन के गणेशजी 1 तारीख को और तीन दिन के गणेशजी 2 तारीख को, पांच दिन के गणेशजी 4 तारीख को और सात दिन के गणेशजी 6 तारीख को और सात दिन के होंगे 8 तारीख को और 9 तारीख को सम्पूर्ण 11 दिन के गणेशजी माने जायेंगे। किन्तु इस बार ग्रह गणित की गणना के अनुसार केवल मात्र 10 दिन के गणेशजी माने जायेंगे, क्योंकि एक दिन लुप्त रहेगा। अनन्त चतुर्दशी के पर्व के साथ गणेशजी का सम्पूर्ण महोत्सव मनाया जायेगा जोकि भाद्रपक्ष शुक्ला चतुर्दशी शुक्रवार, दिनांक 9 तारीख को होगा।

शेष गणेशजी महाराज की कृपा......

।। श्री गणेशाय नमः।।

संस्था समाचार

यूट्यूब पर खुला चैनल

(चैनल का नाम - Acharya Jainendra Katara)

सत्यवान प्रसाद गुप्ता
महामंत्री संस्थान

आचार्य श्री के विशिष्ट कार्यक्रम को यूट्यूब, फेसबुक एवं इन्स्टाग्राम चैनल को सब्सक्राइब करके विविध ज्योतिष, वैदिक उपाय के विधानों एवं श्रीमद् भागवत कथा की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

यद्यपि प्रत्येक पत्रिका के संस्था समाचार लेख में तीन–तीन महीनों का कार्यक्रम दिया जाता है, जो अधिकांशतः कार्यक्रम वही ही रहता है। फिर पर आचार्य श्री के निजी मोबाइल नम्बर–9414052690 या आचार्य श्री के निजी WHATSAPP नम्बर– 9829055120 पर भी अपडेट किया जाता है। उसको पढ़ कर जयपुर अथवा जयपुर से बाहर की उपस्थित का आप लेटेस्ट प्रोग्राम जान सकते हों। सालभर के बड़े प्रोग्राम्स का ब्यौरा **ज्योतिष कल्पतरू नामक वार्षिक पत्रिका एवं गुरु पूर्णमासी पर छपने वाले परिपत्र** में दिया जाता है। इन तीन महीनों **(दिनांक 01 जुलाई, 2022 से 30 सितम्बर, 2022)** का ब्यौरा दिया जा रहा है। जो अनुमानित कार्यक्रम निम्नप्रकार से रहेगा :–

(1) 01 जुलाई, 2022 से 08 जुलाई, 2022 तक जयपुर प्रवास।

(2) 09 जुलाई, 2022 से 11 जुलाई, 2022 तक गोवर्धन प्रवास।

(3) 12 जुलाई, 2022 से 20 जुलाई, 2022 तक जयपुर प्रवास।
– 13 जुलाई, 2022 को संस्थान परिसर, जयपुर में गुरु पूर्णमासी महोत्सव

(4) 21 जुलाई, 2022 से 30 जुलाई, 2022 तक हरियाणा प्रवास।

(5) 31 जुलाई, 2022 से 05 अगस्त, 2022 तक जयपुर प्रवास।

(6) 06 अगस्त, 2022 से 08 अगस्त, 2022 तक गोवर्धन प्रवास।

(7) 09 अगस्त, 2022 से 15 अगस्त, 2022 तक जयपुर प्रवास।

(8) 16 अगस्त, 2022 से 24 अगस्त, 2022 तक हरिद्वार प्रवास दौरान भागवत कथा का आयोजन।

(9) 25 अगस्त, 2022 से 28 अगस्त, 2022 तक जयपुर प्रवास।

(10) 29 अगस्त, 2022 से 14 सितम्बर, 2022 तक दुबई प्रवास।
सम्पर्क सूत्र – (+ 971528545990, + 971505386339)

(11) 15 सितम्बर, 2022 से 17 सितम्बर, 2022 तक जयपुर प्रवास।

(12) 18 सितम्बर, 2022 से 19 सितम्बर, 2022 तक गोवर्धन प्रवास।

(13) 20 सितम्बर, 2022 से 05 अक्टूबर, 2022 तक जयपुर प्रवास।

प्रवास दौरान–26 सितम्बर, 2022 से 04 अक्टूबर, 2022 तक नवरात्रों का विशिष्ट विधान संस्थान परिसर, जयपुर में प्रतिदिन प्रातः 9:00 बजे से 10:00 बजे तक एवं रात्रि 9:00 बजे से 10:00 बजे तक।

गणेशजी की कुण्डली

डंके की चोट पर

आचार्य श्री जैनेन्द्र कटारा

स्वतन्त्र भारत की कुण्डली

76वें वर्ष की कुण्डली

77वें वर्ष की कुण्डली

1 जुलाई, 2022 की सूर्योदय प्रात:कालीन कुण्डली

जगत लग्न कुण्डली

श्री गुरुवे नमः, माता पिता चरण कमलेभ्यो नमः, मां सरस्वती चरण कमलेभ्यो नमः, कुलदेवता कमलेभ्यो नमः एवं नैत्रसिला महारानी के चरणों में नमन करते हुए, अघोरी बाबा का आशीर्वाद लेते हुए प्रभु के नाम चिन्तन के साथ "डंके की चोट पर" त्रैमासिक नामक लेख ज्योतिष विज्ञान पत्रिका के 27वें वर्ष के संयुक्त अंक–4,5,6 **(01 जुलाई, 2022 से 30 सितम्बर, 2022 तक)** के लिए लिखने जा रहा हूं। मां भगवती, गायत्री मेरी कलम को सार्थकता प्रदान करेगी।

जैसाकि सभी पाठकगण भली भांति परिचित हैं और इस लेख को प्रिय पाठकगण पसंद भी करते हैं। चूंकि इसमें मां भगवती की प्रेरणा से उन सब चीजों का समावेश करने का प्रयत्न करता हूं जिनकी आम व्यक्तियों को जरूरत होती है।

प्राकृतिक एवं मानसून की दृष्टि से – भारत देश एक कृषि प्रधान देश है और कृषि को वर्षा की परम आवश्यकता होती है। क्योंकि जुलाई, अगस्त, सितम्बर महीने में वर्षा का सत्र चलेगा। सबसे पहले तो मैं यह बताना चाहूंगा कि देव संयोग से यद्यपि पंचांगों में भिन्न–भिन्न बातें लिखी जाती हैं, किन्तु विविध ग्रहों के अध्ययन, गुरु प्रेरणा और दिव्य दृष्टि से मैं देख रहा हूं कि इस बार भारत की भूमि पर प्रचूर मात्रा में सम्पूर्ण देश में वर्षा का अच्छा संयोग है। जिससे पानी की कमी के कारण जनता त्राहि–त्राहि कर रही है उसमें आंशिक राहत मिलेगी और किसान वर्ग में प्रसन्नता की लहर आयेगी और वे अपनी खेती में बरसात के पानी से उत्पादन बढ़ायेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

जैसाकि जुलाई महीना के आते–आते मानसून सक्रिय हो जायेगा। जोकि जुलाई के प्रथम सप्ताह में ही मानसून की दस्तख उत्तर भारत में सर्वत्र दिखाई पड़ रही है। जोग संयोगानुसार जुलाई के प्रथम सप्ताह में घोड़े पर सवार जैसी छलांग वर्षा का प्रभाव रहेगा। अर्थात् कहीं पर तेज, तो कहीं पर सूखा और कहीं पर गर्जन के साथ, कहीं पर तेज अंधड़ के साथ वर्षा की शुरूआत 4 जुलाई से आरम्भ हो रही है। जोकि लगभग 8 दिन तक यानी 12 जुलाई तक स्पष्ट रूप से सम्पूर्ण भारत को तर करके अपना कार्य पूरा करेगी। 12 जुलाई से पुनः 19 जुलाई तक वर्षा का कुछ

रूप मंदा रहेगा और पुनः 20 जुलाई से मेंढ़क के संयोग से वर्षा आरम्भ होगी। मेंढ़क पानी चाहता है और उछलकूद के लिए उसको पर्याप्त जल चाहिये। इसमें तेज संघन वर्षा गर्जना के साथ सीधी वर्षा होगी, अंधड़ कम होंगे, लेकिन मोटी बूंदों के साथ में तेज वर्षा होने के कारण ताल तलैया सभी भर जायेंगे। खेतों में भी पानी दिखाई पड़ने लगेगा, छोटे नदी नाले उबलने लगेंगे। यह वर्षा को योग 9 दिन तक यानी 28 जुलाई तक नियमित रहेगा। जो सम्पूर्ण भारत में केवलमात्र वर्षा ही नहीं करेगा बल्कि गर्मी से भी कुछ राहत मिलेगी जिससे आम जनता में खुशी की लहर दौड़ेगी।

तदोपंरात वर्षा का हल्कासा रुख लगभग सप्ताह के लिए रुका रहेगा यानी 28 जुलाई से 3 अगस्त तक बादल साफ रहेंगे। पुनः 3 अगस्त से भारी भरकर चातक वर्षा के वाहन से आयेगी जो नियमित घोर वर्षा का रुप लेगी। जिसमें घटाएं छा जायेगी, कहीं रिमझिम–रिमझिम तो कहीं घोर वर्षा रातोंरात चलेगी तो कहीं पर दिनोंदिन चलेगी। इससे भी लोगों में राहत की सांस आयेगी और उनमें खुशी की लहर दौड़ेगी और मन में प्रसन्नता का संचार करेंगे। इस वर्षा का योग 6 दिन तक लगातार दिखाई पड़ रहा है उसके बाद लगातार 7 दिन का गैप रहेगा।

तदोपंरात 17 अगस्त से पुनः चंचल और अश्व आरुड़ वर्षा होगी। कहीं पर बहुत तेजी से तो कहीं पर बूंदाबांदी, कहीं पर धूप तो कहीं पर छाव के विचित्र दृश्य दिखाई पड़ेंगे। उसके बाद 4 दिन वर्षा थमेगी और जन्माष्टी के आसपास एकदम घोर वर्षा के प्रबल योग हैं, घटाएं छायी रहेगी और रिमझिम वर्षा चलती रहेगी।

इसी क्रम में सितम्बर के प्रथम सप्ताह में कुछ वर्षा के योग दिखाई पड़ रहे हैं। 15 सितम्बर तक वर्षा थोड़ी–थोड़ी कम होने लगेगी। श्राद्ध पक्ष में भी वर्षा का रुख थोड़ा–थोड़ा रहेगा। लेकिन इसमें मौसम की अंगड़ाई ठण्डक की ओर होगी और यदाकदा अच्छी बरसात भी होगी। ऐसी वर्षा की स्थिति सितम्बर माह के अंत तक रहेगी।

राजनीतिक दृष्टि से–भारत के सर्वोच्च पद–राष्ट्रपति के चुनाव अगले माह जुलाई, 2022 में होने वाले हैं। ग्रह गोचर एवं ज्योतिषीय गणना के अनुसार दलित वर्ग या आदिवासी वर्ग से नया चेहरा ऊभर कर आयेगा।

जब हम स्वतंत्र भारत की कुण्डली का अध्ययन करते हैं तो वर्तमान समय में चन्द्रमा की महादशा में बुध की अन्तरदशा चल रही है। बुध की अन्तरदशा में भी इन तीन महीनों में चन्द्रमा में बुध, बुध में राहु एवं बुध में गुरु का प्रत्यंत्तर और हल्कासा शनि का प्रत्यंत्तर रहेगा। यह स्थिति राजनैतिक क्षेत्र में मिलाजुला फल देंगे। जिससे तकनीकी क्षेत्र में विकास की दर दिखाई पड़ रही है। लेकिन वर्तमान 15 अगस्त से पहले भारत की स्वतंत्र कुण्डली के 12वें घर में प्रवेश करने के कारण संघर्ष और आर्थिक थोड़ासा खींचमतानी के संकेत दिखाई पड़ रहे हैं। किन्तु आगामी वर्ष यानी 15 अगस्त, 2022 के बाद यही ग्रह योग पराक्रम की ओर आ जाते हैं। क्योंकि तृतीय स्थान का प्रवेश रहेगा और मूंथा पंचम स्थान पर होने से भारत

के गत वर्ष यानी 15 अगस्त तक शिक्षा तकनीकी में जो बेशुमार प्रगति–उन्नति हुई है वह सबके सामने मौजूद हैं।

आगामी वर्ष में मूंथा पराक्रम स्थान में होगा जोकि पराक्रम लग्न राशि भी आती है जिसके परिणामस्वरूप भारत का विश्व के अन्दर डंका बजने लगेगा और माननीय प्रधानमंत्री मोदीजी का उन्नति का ग्राफ अत्यधिक बढ़ेगा। जिसके परिणामस्वरूप अनेक देशों का निवेश आयेगा और भारत में इन तीन महीनों में अनेक घोषणाएं भी होंगी। कुछ निवेश पहुंच भी जायेंगे। इसी खुशी के साथ में अब हम राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं।

केन्द्र सरकार में मंत्रिमण्डल में आंशिक फेरबदल होगा। घोटालों पर नियंत्रण करने के लिए विशेष टीमें गठित की जायेगी। तकनीकी विकास और उन्नति का रास्ता थोड़ा खोला जायेगा। हर दृष्टिकोण से केन्द्र सरकार अपनी बुद्धि विवेक से जनता के हित में कार्य करेगी। जिससे वर्तमान सत्तारूढ़ पार्टी और माननीय प्रधानमंत्री की साख निरन्तर बढ़ेगी।

दिल्ली–दिल्ली राज्य में कुछ खींचमतान चलती रहेगी और मिलाजुला असर दिखाई पड़ेगी। जिसमें कुछ लाभ और कुछ हानि दोनों ही प्रकार के संकेत दिखाई पड़ रहे हैं। साथ ही अराजकता के चांसेज की सम्भावना है। जिसमें पानी की सप्लाई बाधित होगी। नालियां अवरुद्ध रहने से सड़कों पर पानी इकट्ठा हो जायेगा। म्यूनिरिपल कॉरपोरेशन एवं डीडीए और अन्य जो संस्थाएं हैं जो भी जनता को राहत देने में पूर्ण समर्थ नहीं होगी। कुछ बिजली की आपूर्ति और भयानक मौसम के चलते दौर में दिल्ली वासियों को थोड़ा कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कोई विशेष उन्नति की राह मुझे इन तीन महीनों में दिखाई नहीं पड़ रही है, केवल बादलों की गर्जना की तरह घोषणाएं जरूर होंगी किन्तु उनकी क्रियान्विति नहीं हो पायेगी।

राजस्थान–राज्य में सरकार के आपसी अन्तरद्वूंद के कारण उन्नति पर कोई ध्यान नहीं दे पायेगा। अपनी–अपनी कुर्सी बचाने में सभी जुटे रहेंगे। जिससे जनता की उन्नति के मार्ग की योजनाएं केवलमात्र कल्पनाओं और सचिवालय की गलियारों में घूमती रहेगी। आम जनता तक घोषणाएं पहुंचाने में सरकार असफल रहेगी। वर्तमान सरकार की साख सुधरेगी और आपस में कुछ तीखी दरार और नौंक झोंक चलती रहेगी। यद्यपि प्रकृति का साथ देने से समय पर राजैनीतिक क्षेत्र में जनता का ध्यान कम ही जायेगा। वर्षा के कारण अपनी खेती और व्यापार में व्यस्त रहेंगे।

हरियाणा–राज्य में आपसी मतभेद के चलते दरार बढ़ेगी। जिससे उन्नति के मार्ग संसाधन अवरूद्ध होंगे। किन्तु फिर भी शिक्षा, चिकित्सा और मार्ग संसाधनों में हरियाणा सरकार कुछ काम कर दिखाने में समर्थ रहेगी और खेल जगत में भी हरियाणा राज्य का नाम बढ़ेगा।

पंजाब–प्रांत में बड़ी अनहोनी घटनाएं दिखाई पड़ रही है। वर्तमान सरकार कुछ हिलने डुलने लगेगी और उन्नति के रास्तें बंद रहेंगे। केवल मध्यम वर्गीय और निम्न वर्गीय लोग खुश रहेंगे। किन्तु तकनीकी विकास और शिक्षा के

क्षेत्र में कोई उन्नति का रास्ता पिछली सरकार का दिखाई नहीं पड़ रहा है। वर्तमान सरकार यथावत चलती रहेगी।

जम्मू एण्ड कश्मीर—राज्य में कुछ अराजकता पर नियंत्रण होगा। नाना प्रकार के भारत विरोधी संगठनों पर नियंत्रण पाया जायेगा। घुसपैठियों की संख्या कम होगी। भारतीय सेना द्वारा करारा जवाब देने से घटनाएं कम होंगी। शिक्षा, संसाधन और संगठन तीनों का यह दल जम्मू एण्ड कश्मीर में बढ़ेगा एवं निष्कासित कश्मीरी पण्डितों का धीरे–धीरे जम्मू एण्ड कश्मीर में आवास शांतिपूर्वक दिखाई पड़ रहा है। जिससे आम जनता में राष्ट्र हित की भावनाएं जाग्रत होंगी।

असम—राज्य में मिलाजुला असर दिखाई पड़ रहा है जिसमें हालांकि लूटपाट और आगजनी के केस कम होंगे। लेकिन फिर भी सरकार इनमें उलझी रहेगी। जिससे असम सरकार जनता की उन्नति प्रगति पर ज्यादा ध्यान विशेष रूप से नहीं दे पायेगी।

उत्तर प्रदेश—राज्य इन तीन महीनों में कीर्तिमान स्थापित करेंगे। धार्मिक स्थलों का संरक्षण बढ़ेगा। पर्यटक स्थल चमन होंगे। सुरक्षा और संरक्षण बढ़ेगा। चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष उन्नति होगी। अपराधिक संख्याओं में कमी आयेगी। जिससे माननीय मुख्य मंत्रीजी का सम्मान बढ़ता चला जायेगा।

बिहार—राज्य में भी कल्याणकारी जनता के हित में कार्य होंगे। जिससे लाभ होगा, प्रगति होगी, प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी, नाना प्रकार के सुख समृद्धि के साधन दिखाई पड़ रहे हैं। लघु उद्योग और बड़े उद्योगों पर सरकार बिहार की जनता को विविध प्रकार के रोजगार मुहैय्या कराने में समर्थ रहेगी।

पश्चिमी बंगाल—राज्य में कुछ अराजकता, जाति दंगे, साम्प्रदायिक दंगों के भड़कने के भड़कने के कारण विशेष आम जनता की उन्नति के रास्ते कुछ अटके और भटके रहेंगे। किन्तु केन्द्र सरकार का थोड़ा ध्यान जायेगा। जहां पर सुरक्षा के साथ–साथ मार्ग संसाधन और पर्यटक क्षेत्र में विकास, शिक्षा के जगत में उन्नति, नाना प्रकार की तकनीकी का विकास होगा, पहाड़ों एवं अन्य जिलों का संरक्षण करने से भारत में विविध प्रकार की अन्य औद्योगिक योजनाएं भी लागू होंगी। जिससे स्व रोजगार की योजना, प्रगति की योजना एवं फसल उगाने जैसे विविध योजनाएं यहां पर विस्तार रूप से लागू होंगी।

मध्य प्रदेश—राज्य में मिलाजुला फल दिखाई पड़ रहा है। जनता में संतोष की भावना होगी। किन्तु किसान और व्यापारी वर्ग असंतुष्ट रहेंगे। जबकि विद्यार्थी वर्ग संतुष्ट रहेगा। बुद्धिजीवी वर्ग भी संतुष्ट रहेगा एवं आदिवासी क्षेत्रों में आशा से अधिक संसाधन मार्ग बढ़ेंगे जिससे शिक्षा और संस्कृति इन दोनों के क्षेत्रों में चमन होगा, दोनों में प्रगति आयेगी।

गुजरात—राज्य भी अपने अपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रगति की सूचना देंगे। यद्यपि विविध राजनैतिक दल अपना–अपना चुनावी माहौल का डंका बजने लगेगा। विभिन्न समुदाय, पार्टियां अपनी–अपनी शक्ति प्रदर्शन, प्रचार–प्रसार में

सक्रिय हो जायेगी। किन्तु फिर भी भारतीय जनता पार्टी का बोलबाला रहेगा एवं विविध प्रकार के उन्नति के रास्ते भी साथ ही साथ चलते रहेंगे। कुछ कार्य वहां पर अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठतापूर्वक सरकार की ओर से किये जायेंगे। जिससे वहां की जनता काफी खुश एवं प्रसन्नचित दिखाई पड़ेगी।

महाराष्ट्र—राज्य में आपसी खींचमतान के कारण ज्यादातर उन्नति के मार्ग नहीं बन पायेंगे। केवल आदी व्याधि और नाना प्रकार की व्याधियां ज्यादा रहेगी और उन्नति के मार्ग रुकें रहेंगे। आशा से कम मार्ग संसाधन जुटेंगे, उसमें कोई संदेह नहीं है।

गोवा—राज्य में भी पर्यटनों की संख्या बढ़ेगी। इंफ्रास्ट्रेक्चर बढ़ेगा। मार्ग संसाधन भी बढ़ेंगे। उन्नति के रास्ते भी दिखाई पड़ रहे हैं। हालांकि छोटे से साम्प्रदयिक दंगे होंगे। किन्तु उन पर भी सफलतापूर्वक नियंत्रण रहेगा।

उत्तराखण्ड—राज्य में भारत की देव भूमि में विविध प्रकार के यज्ञ, जप, तप और योगियों का आगमन एवं इस सरकार में कुछ उन्नति के मार्ग बनेंगे। जिससे पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि नयी तकनीकी से होने लगेगी। मार्ग संसाधन भी बढ़ेंगे और पर्यटन विशेष रूप से बढ़ने से यहां की जनता में खुशियां होंगी और यहां की इकानॉमी उन्नति की ओर बढ़ेगी।

व्यापारिक दृष्टि से—विविध प्रकार के संयोगों के साथ—साथ हम व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से ये तीन महीने भारत की भूमि के लिए अत्यन्त ही शुभ और श्रेष्ठ हैं। विदेशी निवेश आयेगा। जिससे भारत में विविध इकाइयां जन्म लेंगी जिससे भारतीय बेरोजगारी का कुछ हिस्सा कम होगा।

इसी श्रृखंला में नाना प्रकार के शिक्षा, चिकित्सा और वैज्ञानिक तथ्यों का भी विकास दिखाई पड़ रहा है। कुछ विदेशी निवेश आने से व्यापार की वृत्ति भी बढ़ेगी जिससे भारतीय सूचकांक जुलाई महीने में पूर्ण गिरावट की ओर, अगस्त महीने में मिलाजुला और सितम्बर में पूर्ण उन्नति की ओर बढ़ेगा।

इसी क्रम में सोना—चांदी सांप सीढ़ी के खेल की तरह कुछ प्लस माइन्स चलते रहेंगे, किन्तु मैजर परिवर्तन के कोई संकेत दिखाई नहीं पड़ रहे हैं।

इसी प्रकार से खनिज पदार्थ, घातुओं और स्वर्ण के साथ में एक असाधारण परिवर्तन आयेगा। जिससे इनमें भाव बहुत ज्यादा बढ़ सकते हैं। जिससे भारतीय मुद्रा पर नियंत्रण की आवश्यकता पड़ सकती है। फिर भी ये तीन महने व्यापारिक दृष्टिकोण से भारत के लिए लाभदायक रहेंगे। जिसमें तिलहन, अनाज और चीनी आदि के भाव आंशिक नियंत्रण में लाये जायेंगे। बाकी मिनरल और सभी इलैक्ट्रिकल इलैक्ट्रोनिक और खनिज संबंधी चीजों में आंशिक भाव बढ़ेंगे। जिससे मंहगाई का स्पष्ट रूप से पूरे भारत में असर दिखाई पड़ेगा। इससे धीरे—धीरे जनता में असंतोष की भवना बढ़ेगी।

शेष भगवत कृपा........

।। श्री गणेशाय नमः।।

गणेशजी की कुण्डली

मकर लग्न सहज चिन्तन

अनुसंधान की राह पर .....

(प्रथम एवं द्वितीय स्थानगत सूर्य की विवेचना)

आचार्य श्री जैनेन्द्र कटारा

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से ज्योतिष विज्ञान पत्रिका के आरम्भ से ही 13 अप्रैल, 1996 को जब पहला अंक प्रकाशित हुआ उस समय से ही "<u>लग्न सहज चिन्तन</u>" का धारावाहिक स्तम्भ लेख चल रहा है। क्योंकि यह लेख पाठकों को अत्यन्त प्रिय है। चूंकि इसमें ज्योतिषीय तत्वों के साथ-साथ अनुभव का ज्ञान और नक्षत्र के आधार पर जो ग्रहों में परिवर्तन होता है उसका विशलेषण एवं किन-किन ग्रहों के संयोग से कौनसे ग्रह कारक और अकारक फल हो जाते हैं। उन सबका एक उचित समन्वयक सार विवर्ण प्रदान किया जाता है। जोकि ज्योतिष प्रेमी और जिस लग्न के संबंध में लिखा जाता है उस लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को यह लेख अत्यन्त उपयोगी साबित होता है। इस स्तम्भ के वर्ष 27वें 4,5,6 के संयुक्त अंक में मकर लग्न में सूर्य के फल दिये जा रहे हैं।

(प्रथम स्थानगत सूर्य की विवेचना)

लग्न में सूर्य जैसाकि पाराशर जैमिनी और वाराहमिहिर जो ज्योतिष के उदवट विद्वानों ने सर्वथा लग्न के सूर्य को कारक देखा है। अनुभव से हमने भी लग्न के सूर्य को कारक ही स्वरूप में देखा है। किन्तु मकर लग्न क्रा स्वामी शनि होता है। सूर्य और शनि दोनों पिता पुत्र होते हुए भी दोनों एक दूसरे से विवादास्पद रहते हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि शनि सदैव सूर्य को सम्मान ही देते हैं। जबकि सूर्य शनि का दमन करने के लिए ज्यादातर संयोगों और ग्रह संयोगों में बंधे रहते हैं। यद्यपि शनि ग्रहों के राजा सूर्य पुत्र यमराज के भाई, कालींदी के भाई और भगवान कृष्ण के संबंधी माने जाते हैं। इनकी कृपा से संसार में कोई भी असम्भव कार्य होते ही नहीं, बल्कि सभी कार्य सम्भव हो जाते हैं और इनकी कुदृष्टि से कोई भी कार्य सम्भव हो ही नहीं सकता, यह भी सर्वविदित है।

अतः मकर लग्न वालों में एक अद्भुत कार्य की शक्ति और सफलता का एक अनुपम उत्साह रहता है। जिसके बलबूते पर वे आगे बढ़ते रहते हैं। यहां पर हम जिक्र कर रहे हैं सूर्य ग्रह का।

<u>ग्रह स्थिति-1 :</u> सूर्य जब मकर लग्न में प्रथम घर में 10 अंश पर्यंत होने पर वह व्यक्ति अत्यन्त ही उत्साहित निर्णायक विवेक बुद्धि वाला, दूसरों पर अपना प्रभाव जमाने वाला, नेतृत्व क्षमता वाला और सबसे अधिक शारीरिक पुष्ट एवं देखने में खूबसूरत और मनोहर पाया जाता है। शारीरिक क्षमता उसकी अधिक होती है और उसके अन्दर दूसरों की पहचानने की क्षमता भी पायी जाती है।

<u>विशिष्ट विवेचना और उपाय :</u> उक्त अवस्था में सूर्य उत्तराषाढ़ा नामक अपने ही नक्षत्र पर भ्रमण करने के कारण इस लग्न में प्रभावी हो जाते हैं। यहां पर शनि इन्हें प्रभावित नहीं कर पाता है और वे व्यक्ति पूर्ण सफल देखे गये हैं।

<u>ग्रह स्थिति-2 :</u> मकर लग्न में सूर्य जब मकर राशि पर ही लग्न में स्थिति 10 डिग्री 0 अंश से 23 अंश 20 कला तक अगर स्थापित होता

है तो ऐसे जातक परिवर्तनशील स्वभाव के निर्णायक स्थिति में अपने आपको पावरफुल मानने वाले यद्यपि देखने में आकृषक होते हैं, किन्तु कार्य करने में अस्थिर मस्तिष्क के होते हैं। कभी–कभी मूंगेरी लाल के हसीन सपनों की तरह बड़े–बड़े सपने देखते हैं और कभी–कभी वे अपने आपको कमजोर महसूस करके और बड़े कार्यो को करने में या बड़े कार्यो में निर्णय लेने में थोड़ा संकोच धारण करते हैं और ज्यादातर वे जातक सफल नहीं देखे जाते हैं।

विशिष्ट विवेचना और उपाय : उक्त अवस्था में शनि देव अपने शत्रु चन्द्रमा के नक्षत्र पर भ्रमण करेंगे। जैसाकि चन्द्रमा के साथ में इनका अस्थाई प्रभाव देखा जाता है और निर्णायक स्थिति उनकी ज्यादातर कमजोर हो जाती है। ऐसी अवस्था में चन्द्रमा को ताकत देना यद्यपि हितकारक होगा। किन्तु साथ ही साथ शनि की स्थिति देखना भी परम आवश्यक है। क्योंकि शनि अगर उन पर दृष्टि बनी रहेगी तो वह व्यक्ति और भी कमजोर पाया जायेगा। किन्तु शनि जनित उसमें फल प्रभावित हो जायेंगे। जो आगे की कड़ियों में प्रसंगानुसार उसकी व्याख्या और वर्णन सविस्तारपूर्वक करेंगे।

ग्रह स्थिति–3 : जब सूर्य मकर लग्न में 23 अंश 20 कला से सम्पूर्ण राशि पर्यंत होने पर वह व्यक्ति अत्यन्त प्रभावयुक्त धनी, यशस्वी और तुरन्त निर्णय लेने में समर्थ होता है। शरीर से कभी–कभी भारी और पुष्ट तो होता ही है, किन्तु आलसी भी देखा गया है। कार्य की सफलता उस जातक के साथ में अवश्य रहती है। किन्तु स्वभाव उसका शेर की तरह होता है यानी नदी और तूफान की तरह दौड़ेगा और आलस केवल अपनी सुख सुविधाओं में और व्यर्थ के प्रपंच झगड़ों में उलझा हुआ रह जायेगा।

विशिष्ट विवेचना और उपाय : चूंकि उक्त अवस्था में सूर्यदेव घनिष्ठा नामक मंगल के नक्षत्र पर भ्रमण करेंगे। यद्यपि मंगल और सूर्य की घनिष्ठ मित्रता है, इसमें कोई संदेह नहीं है। किन्तु मकर लग्न में मंगल को अकारक देखा गया है। अकारक तत्व लग्न में सूर्य के साथ में होने से उस जातक के स्वभाव में कभी–कभी उग्रता, दमन नीति एवं स्वार्थ परायणता की भावना अधिक हो जाने के कारण उस जातक को समाज में सम्मान अधिक प्राप्त नहीं हो पाता। यद्यपि इसमें शनि की दृष्टि होने पर वह जातक और भी उग्र स्वभाव के देखे गये हैं। जिनका वर्णन अगले प्रसंगों में विधानपूर्वक किया जायेगा।

(द्वितीय स्थानगत सूर्य की विवेचना)

जैसाकि पूर्व लेख में बताया गया है कि सूर्य मकर लग्न में अष्ठम् घर का स्वामी है। यद्यपि अष्टम् घर को मार्केश मानते हैं तथापि महर्षि पाराशर और जैमिनी सूत्र के अनुसार सूर्य अष्ठम् स्थान का स्वामी और अष्ठम स्थान पर स्थापित होते हुए भी मार्केश नहीं बनता है। जिसको वृहत लघु पाराशर में स्पष्टीकरण के साथ बताया है कि जब कोई भी ग्रह एक ही राशि का स्वामी होकर अगर अष्ठम में स्थित हो या अष्ठम घर का स्वामी हो तो कदापि मार्केश नहीं बनता है। इस श्रेणी में केवल सूर्य, चन्द्रमा ही आते है। जिनकी समय–समय पर व्याख्या और वर्णन इस लेख के माध्यम से करते रहेंगे।

ग्रह स्थिति–1 : द्वितीय स्थान पर सूर्य की

उपस्थिति धन के लिए पुष्टिकरण, किन्तु वाणी में कर्कशता और विविध प्रकार की स्वभाव में कठोरता का परिचायकता प्रदान करेगी। इसमें भी विशेष रूप से जब सूर्य मकर लग्न के द्वितीय स्थान पर कुम्भ राशि के 6 अंश 40 कला तक होने पर उसकी वाणी में स्पष्टता होती है, टू दी पाइंट स्पष्टीकरण के साथ बात करते हैं। तर्क शक्ति उनकी प्रबल होती है। ऐसे जातक सलाहकार, वकील या लेखक भी हो जाते हैं। इनके जीवन में धन की परिपूर्णता रहती है और सम्पन्नता बनी रहती है।

<u>विशिष्ट विवेचना और उपाय :</u> इस ग्रह संयोग में बालक का जन्म ब्रह्म मूहुर्त में दिखाता है और सूर्य घनिष्ठा नामक नक्षत्र पर भ्रमण करते हैं जोकि मंगल के परम मित्र हैं और श्रेष्ठकारक भी हैं। इन कारणों से मंगल द्वितीय स्थान पर सदैव कारक होता है और सूर्य की दृष्टि या सूर्य के नक्षत्र पर कोई भी ग्रह या मंगल के नक्षत्र पर कोई भी ग्रह इस राशि पर इस संयोग में आता है तो उसके लिए लाभप्रद ही देखा गया है, ऐसा अनुभव से पाया गया है।

<u>ग्रह स्थिति नम्बर–2 :</u> मकर लग्न में द्वितीय स्थान पर कुम्भ राशि के 6 अंश 40 कला से 20 अंश 0 कला तक जब सूर्यदेव द्वितीय स्थान पर होते हैं तो उस जातक की वाणी में कठोरता एवं कभी–कभी निम्न कर्मों से धन कमाने का इच्छुक, धन का लालची लोभी और कभी–कभी षड्यंत्रकारी भी देखे जाते हैं। उनके जीवन में धन की स्थिति कमजोर बनी रहती है और अपनी वाणी में स्पष्टता का निर्णय नहीं कर पाते हैं।

<u>विशिष्ट विवेचना और उपाय :</u> चूंकि उक्त अवस्था में सूर्यदेव शतभिषा नामक राहु के नक्षत्र पर भ्रमण करेंगे। जैसाकि राहु और सूर्य एक दूसरे के विरोधाभाष शत्रु रूप में देखे जाते हैं और द्वितीय स्थान पर राहु की स्थिति यद्यपि धन संग्रह कराने वाली होती है, किन्तु उनके मार्ग बहुत अच्छे नहीं होते, ऐसा अनुभव से भी देखा गया है और महर्षि पाराशर ने भी इसका समर्थन किया है। इस कारण से उक्त अवस्था में उस जातक को मिलाजुला ही फल प्राप्त होगा।

<u>ग्रह स्थिति–3 :</u> मगर लग्न में द्वितीय स्थान पर कुम्भ राशि के 20 अंश 0 कला से सम्पूर्ण कुम्भ राशि पर्यंत यदि सूर्य द्वितीय स्थान पर उपस्थित रहते हैं तो वह जातक अत्यन्त ही धनी, विनम्र, सहज स्वभावी, ज्ञान, विज्ञान का दाता और अपनी वाणी से अनेक लोगों को प्रभावित करने वाला सुखी और श्रेष्ठ इन्सान पाया जाता है।

<u>विशिष्ट विवेचना और उपाय :</u> उक्त अवस्था में सूर्यदेव पूर्वाभाद्रपद नामक गुरु के नक्षत्र पर भ्रमण करेंगे। जैसाकि सर्वविदित है सूर्य और गुरु परस्पर एक दूसरे के धनिष्ठ मित्र हैं। यह भी एक अपवाद साथ में जुड़ता है कि गुरु मकर लग्न में कभी कारक नहीं होता है। लेकिन सूर्य के नक्षत्र और सूर्य के संयोग में इनमें कारक तत्व अनुभव से देखे गये हैं और वह जातक धन कमाने में दक्ष होते हैं। कभी–कभी इस ग्रहयोग में जातक कथावाचक, विद्वान पण्डित या लेखक भी देखे जाते हैं। चूंकि वाणी का स्थान और कलंक का स्थान दोनों को द्वितीय स्थानगत देखा गया है, जहां पर इनकी प्रचूर मात्रता में एक सुखद गठबंधन गुरु और सूर्य का देखा होता है।

शेष भगवत कृपा.............

गुरु पूर्णमासी अमृत महोत्सव

(गुरु पूर्णमासी के दिन गुरुपूजा से होते हैं सभी कार्य सिद्ध)

(बुधवार, दिनांक 13 जुलाई 2022 को प्रातः 7 बजे से)

विशाल गुप्ता (मुम्बई)

देवपुराण, इतिहास, उपनिषद् एवं समस्त ग्रंथों में गुरु पूर्णमासी पावन महापर्व का विशेष रूप से उल्लेख प्राप्त होता है। यद्यपि गुरु पूर्णमासी महोत्सव गुरु शिष्य के संबंधों को प्रगाढ़ बनाने के लिए है, किन्तु इसके पीछे कुछ ऐतिहासिक बिन्दु और रहस्य भी छुपे हुए हैं।

1. वैदक व्यासजी का जन्म आज ही के दिन अर्थात् गुरु पूर्णमासी के दिन ही हुआ था।
2. गऊकरण ने धुंधकारी के निमित्त भागवत कथा का वाचन किया था और उसकी पूर्णाहूति भी आज ही के दिन यानी गुरु पूर्णमासी के दिन ही हुई थी।

उसके उपरांत ज्योतिषीय तत्वों के आधार पर इसकी पांच व्याख्याएं दी गयी हैं। जिसमें सर्वाधिक व्याख्या निर्णय सिंधु के आधार पर <u>**"आषाढ मासै शुक्ल पक्षै पूर्णियाम पावन तिथौ उत्तराषाढा नक्षत्रं मकरे चन्द्र और कर्क कै रवि"**</u> पूर्णमासी के दिन जब पांच संयोग एकत्रित होते हैं अर्थात् आषाढ़ का महीना, शुक्ल पक्ष, पूर्णमासी तिथि के दिन उत्तराषाढ़ा नामक नक्षत्र, सूर्योदय कालीन मकर के चन्द्रमा और कर्क के सूर्य। यद्यपि ये पांचों तथ्य जब एकत्रित होते हैं तो अपने आपमें अनूठी और सर्वश्रेष्ठ पूर्णमासी कहलाती है। जोकि हमारे सनातन धर्म का महापर्व होता है। किन्तु गणना के आधार पर कभी–कभी इन तथ्यों में थोड़ासा परिवर्तन भी आ जाता है। कई कारणों से महीनों की तिथि, वार नक्षत्रों में आंशिक परिवर्तन हो जाता है। इनको ध्यान में न रखते हुए हमें आषाढ़ शुक्ला को ही पूर्णमासी पावन गुरु पर्व मनाना चाहिये। जोकि इस वर्ष <u>**बुधवार, दिनांक 13 जुलाई, 2022**</u> को पड़ रही है।

आदित्य ज्योतिष शोध संस्थान के तत्वावधान में सदैव की भांति इस वर्ष भी आचार्य श्री जैनेन्द्र कटाराजी के सानिध्य में सम्पूर्ण शिष्य मण्डली के उद्धार और कल्याण हेतु यह आयोजन प्रातःकाल 7:00 बजे से ही आरम्भ हो जायेगा। जो देर रात्रि तक चलता रहेगा।

<u>गुरु पूर्णमासी महोत्सव के फायदे</u>

1. विविध वायु पुराण, स्कन्द पुराण आदि में प्रमाण प्राप्त होता है कि गुरु पूर्णमासी के दिन जो व्यक्ति अपने गुरु चरणों की पूजा करता है उसे सुनिश्चित रूप से सद्गति प्राप्त होती है और गुरु के प्रतिदिन दर्शन करने का फल उसे प्राप्त होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है।
2. गुरु पूर्णमासी के दिन गुरु के आश्रम, गुरु के घर में शिष्यों के द्वारा भोजन प्रसादी ग्रहण की जाती है, उससे उनके सालभर में जाने–अनजाने में किये हुए लघु और दीर्घ सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और उनके अपने जीवन में एक अपार सुख की प्राप्ति के साथ–साथ उन्नति के मार्ग भी खुल जाते हैं।
3. गुरु पूर्णमासी के दिन अधिक से अधिक समय पर गुरु सेवा, गुरु सानिध्य में सेवकों के रूप में जो भक्त रहते हैं उन्हें भगवान का सामीप्य मोक्ष अर्थात् वे भगवान के पार्षद् बनते हैं, ऐसा पुराणों में प्रमाण प्राप्त होता है।,
4. गुरु पूर्णमासी के दिन गुरु के चरणों में

श्रद्धापूर्वक किया हुआ अर्पण धन, दान स्वरूप अन्नतः गुणा फल देने वाला होता है और वे व्यक्ति जन्म जन्मान्तर में पराक्रमी व धनी बनते हैं, ऐसा सभी पुराणों में प्रमाण प्राप्त होता है।

उक्त सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए **दिनांक 13 जुलाई, 2022** आषाढ़ शुक्ला पूर्णमासी बुधवार के दिन आदित्य ज्योतिष शोध संस्थान परिसर, जयपुर में गुरु पाद पूजन और प्रसादी भण्डारे का आयोजन रखा जायेगा।

जो माता, बहन अथवा गुरुभाई पूर्णमासी का व्रत करते हैं उनके निमित्त फलहार की व्यवस्था रहती है, वे फलहार कर सकते हैं। क्योंकि जब तक गुरु दरबार में आप भोजन प्रसादी ग्रहण नहीं करेंगे तब तक आपको पुण्य प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न होती रहती है। इसलिए फलहार के भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित रूप से रहेगी।

जो बंधु–बांधव दूर दराज देशों में है, विषम परिस्थितियों के कारण उस दिन यहां आने में असमर्थ होंगे उनके लिए भारतीय टाइम दोपहर 12:00 से 1:00 बजे के बीच में एक घंटे का लाइव दर्शन कराया जायेगा। अतः अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने के लिए लाइव दर्शन करें और गुरु के प्रति समर्पण भाव से प्रसाद रख कर ग्रहण करें। मध्य–मध्य में उस दिन भजन, कीर्तन आदि के आयोजन भी चलते रहेंगे। भोजन में सभी प्रकार की वस्तुओं का समन्वय किया जायेगा। सभी लोग इस अमृत महोत्सव में भोजन प्रसादी का सम्पूर्ण दिवस आनन्द लेवें और इस आयोजन को सफल बनायें जिससे आपके जीवन में पूर्ण फल की प्राप्ति हो।

चूंकि गुरु पूर्णमासी साल में एक दिन ही आती है। जो गुरु शिष्यों के सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने के लिए अति दुर्लभ अति उत्तम है। इस पावन दुर्लभ महा अनुष्ठान को अवश्य रूप से सफल बनाना है। अतः आप सभी लोग सादर आमंत्रित हैं।

लेख लिखने का उद्देश्य धन संग्रह नहीं है। लेख लिखने का उद्देश्य सबको गुरु पूर्णमासी के महापर्व का लाभ पहुंचना है। इस बिन्दु को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक संख्या में पधार कर इस पावन गुरु पूर्णमासी महोत्सव–महाकुम्भ मेले को सफल बनायें और ध्यान रहे कि इस समस्त कार्य में आप स्वयं ही व्यवस्थाक बनें और स्वयं ही कार्यो को अपने हाथों से सम्भालें। सभी सेवक, सभी स्वामी और सभी गुरु मण्डली से जुड़े हुए लोग अपना ही कार्य समझते हुए इस महान पवित्र कार्य को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करें। जिससे कि आनन्द की अनुभूति होगी, गुरुदेव को प्रसन्नता होगी और गुरुदेव का आशीर्वाद भी आप सभी लोगों को सुनिश्चित रूप से प्राप्त होगा।

शेष गुरु कृपा......

नोट :–

1. **जो व्रत वाले बंधु हैं उनसे आग्रह है कि वे हमारे संस्थान में सेवादारी व्यक्तियों से मिले उनके लिए फलाहार की व्यवस्था सदैव की भांति इस वर्ष भी रखी जाएगी। साथ ही जो महिलाएं सूर्यास्त के बाद भोजन प्रसादी ग्रहण करना चाहती है वे भी सेवादारी से मिल करके उन्हें अवगत करवा दें ताकि उनके लिए प्रसादी की व्यवस्था अलग से कर दी जायेगी।**
2. **जयपुर शहर के बाहर से आने वाले व्यक्ति पूर्व में सूचित करें ताकि उनके ठहरने की व्यवस्था आश्रम में अथवा आश्रम में सन्निकट किसी भी श्रेष्ठ होटल या गेस्ट हाउस आदि में की जा सके। केवल सोने आदि की व्यवस्था अतिथियों के अधिक होने के कारण आसपास की जाती है। बाकी भोजन नाश्ता चाय दूध इत्यादि सभी आश्रम में दिन भर दिव्य रूप से चलता ही रहेगा।**

।। श्री गणेशाय नमः।।

बांसुरी बजाते हुए युगल राधा कृष्ण जी का महत्व

(पति-पत्नी के मध्य कलह, मतभेद निवारण का अचूक प्रयोग)

"ॐ क्लीं कृष्णाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा"

श्रीमती सुनीता कटारा

जैसाकि हम आज के परिप्रेक्ष में देख रहे हैं कि पति–पत्नी में विविध कारणों से आपस में अनबन, आरग्यूमेंट, मतभेद, विपरीत राय ज्यादातर देखने को, सुनने को मिल रहा है। यह अनुभव गरीब, अमीर और मध्यम वर्ग तीनों में दिखाई पड़ रही है। शास्त्रों में कुछ ऐसे अकाट्य प्रयोग और विधान हैं कि उनका अनुपालन करने से सुनिश्चित रूप से पति–पत्नी के मध्य में बहुत ही ज्यादा सकारात्मक ऊर्जा आती है, विवाद कम होता है, आग्यूमेंट कम होने लगते हैं और आपस में आत्मियता बढ़ती है।

जनस्रुतियों का और संतों का कहना यह है कि जहां पर राधा कृष्ण दोनों बांसुरी बजाते हों अथवा अकेली जब राधा बांसुरी बजा रही हो तो भगवान कृष्ण वहां पर विद्यमान हो अथवा देख रहे हो। इन दोनों अवस्थों की झांकी भगवान श्री युगल सरकार राधा कृष्णजी की है, वह प्रत्येक घर में अखण्ड शांति स्थापित करती है।

जुलाई, अगस्त, सितम्बर, 2022, त्रैमासिक पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर जो चित्र छपा है। इस चित्र का उद्देश्य यही है कि जो कोई भी व्यक्ति इस पुस्तक को अपने घर में सम्भाल के, मंढवाके रखेंगे तो आप देखेंगे कि उनके घर में एक अपूर्व शांति, सुख और समृद्धि का प्रवाह शुरू हो जायेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

वास्तिविक तथ्यों के आधार पर जैसाकि प्राचीन ग्रंथ और शास्त्रों का निचौड़ और हमें जो सांकेतिक भाषा में समझाया जाता है कि जहां पर स्त्री बंसी बजाती है उस घर में लक्ष्मी नृत्य करती है। स्त्री बंसी कब बजाती है ? जब पूर्ण सुख और अमन घर में होता है। तो ऐसा संकेत हमारे भगवान श्री राधा कृष्णजी हमें समय–समय पर देते रहते हैं कि घर में पति–पत्नी दोनों के संयोग से ही सुख और समृद्धि की वर्षा होती है। इस चित्र को जिन–जिन व्यक्तियों ने अपने घर में लगाया है अथवा लगाते हैं उनके घर में एक अपूर्व शांति का आभाष हमने अनुभव से देखा है। इसका प्रमाण भी अपने आपमें अकाट्य यही है कि जहां पर घर की स्त्रीयां प्रसन्न मुद्रा में होती है उस घर में लक्ष्मी का वास होता है। जैसाकि शास्त्रों में कहा गया है कि **यत्र पूज्यन्ते नारी, रमन्ते तत्र देवताः।** इसका अर्थ यह है कि जहां पर नारी की पूजा हुई है या जहां पर नारी प्रसन्न हुई है या नारी का सम्मान किया जाता है, वहां पर देवताओं का वास होता है और देवता जहां पर निवास करते हैं वहां पर सुख समृद्धि और सफलता का अचूक और अपूर्व उपलब्धियां देखने को प्राप्त होती है।

अतः राधा कृष्णजी का युगल मंत्र भी साथ में अगर जपा जाय तो कहना ही क्या होगा। वह मंत्र है– **क्लीं कृष्णाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।** इस मंत्र का जप करने से घर में जहां पर विवादित स्थितियां हैं वह अपने आप शांत हो जाती है और जहां घर में पहले से ही शांति स्थापित हैं वहां पर लक्ष्मीजी का अखण्ड वास हो जाता है। जहां पर माता लक्ष्मी निवास करती है वहां पर धर्म, स्वयं अर्थ स्वरूपा लक्ष्मी, समस्त कामनाओं की पूर्ति और भगवान की भक्ति वहां पर अखण्ड निवास करने लगती हैं और जहां पर भक्ति है वहां पर कहा गया है कि जिस घर में **भक्ति हरियाली उस घर में रोज दीवाली** अर्थात् उस घर में दीवाली जैसा माहौल रोजाना रहता है। इसी संदर्भ में यह चित्र इस पुस्तक के मुख पृष्ठ पर छापा गया है। तो सभी लोग उसका लाभ लें और आपके घरों में क्या–क्या अनुभव रहा, यह हमें अवगत करायें।

जय श्री कृष्ण कृपा.........

ब्रज परिक्रमा

84 कोस ब्रज परिक्रमा एवं गोवर्धनजी का वर्णन

राजेन्द्र गोहिल

गतांक से आगे .....

.... अब आगे बढ़ते–बढ़ते हम राजस्थान राज्य की सीमा में प्रवेश कर जाते हैं और पूछड़ी के लोठा की जयकारा करते हुए मंदिर में प्रवेश करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि भगवान के बाल सखा मधु मंगल से गोपियां पूछती हैं कि भगवान कब लौट कर आएंगे? भगवान ठाकुरजी कहां चले गए हैं? पूछ रही सखी हमारो कान्हा अब कब लौट कर आएंगो ?तो अपभ्रंश होते–होते पूछरी का लोठा के नाम से पूजाये जाने लगे। पूछरी का लोठा की जय के बाद कीर्तन भक्ति के अष्ठ सखा में से एक श्री छीठ स्वामी की बैठक के दर्शन करते हैं। उसके उपरांत श्रीनाथजी के मंदिर के दर्शन जिसे श्री महेंद्र पुरीजी ने स्थापित किया था। मंदिर के पीछे पंडित श्री राघव पुरीजी की गुफा है, जहां पर वे भजन, पूजन, ध्यान आदि किया करते थे। इधर ही अष्ठ सखा छीठ स्वामीजी का द्वार या समाधि स्थल है। आगे बढ़ने पर सुरभी कुण्ड जोकि गिर्राजजी की तलहटी में स्थित है। उसके आसपास ही छप्पन भोग का मनोरथ स्थल है जहां पर भक्तजन छप्पन भोग का मनोरथ करते हैं। इधर ही वह स्थल भी है, जहां पर देवताओं के राजा इंद्र का मान भंग हुआ था अर्थात् इंद्र का शरणागति स्थल है।

अब हम लगभग जतीपुरा गांव में प्रवेश कर रहे हैं। यहां पर हरजी कुण्ड के साथ–साथ हरजेश्वर महादेव के मंदिर के दर्शन करते हैं। इधर भगवान के अष्ठ सखा, कीर्तन भक्ति के गोविंद स्वामीजी की बैठक है। श्री वन बिहारीजी के दर्शन करते हुए, एरावत कुण्ड के दर्शन के उपरांत हम सीधे जतीपुरा में मुखारविंद के दर्शन करते हैं। यह एक प्रमुख स्थान है। थोड़ा समय इधर अवश्य बिताना चाहिए। यदि समय हो तो श्रद्धापूर्वक दूध का अभिषेक भी करना चाहिए। इधर पास में ही श्री महाप्रभुजी की 14वीं बैठक है, दण्डवति शीला के दर्शन करके सात परिक्रमा करनी चाहिए। ऐसा कहा गया है कि सात परिक्रमा लगाने के बाद सम्पूर्ण 7 कोस की परिक्रमा का फल प्राप्त हो जाता है। इधर से ही थोड़ा आगे बढ़कर श्रीनाथजी का प्राचीन मंदिर है। भक्तजन पर्वत पर नहीं चढ़ते हैं, किंतु मां बाप की तो गोद में भी बैठा जाता है और कंधे पर भी बस थोड़ी हिम्मत एवं योग्यता होनी चाहिए। आइए हम श्रीनाथजी मंदिर के दर्शन करने चलते हैं। रास्ते में ही सिंदूरी शीला, सुरभि गाय के पैरों के खुर के निशान के साथ–साथ दूध के निशान भी सफेद धारियों के रूप में नजर आते हैं। इन सब का दर्शन करते हुए श्रीनाथजी के मंदिर में प्रवेश हो जाता है। यहां पर घी–तेल आदि के कुएं, सामग्री आदि के एकत्रित करने के लिये गोदाम आदि हैं। इसी आधार पर श्री नाथद्वारा में भी वैसा ही बनाया हुआ है। इधर ही श्री महाप्रभुजी ने मधुराष्टक की रचना करी थी। ऐसी मान्यता है कि

आज भी श्रीनाथजी दिन भर से नाथद्वारा मेवाड़ में रहते हैं तथा रात्रि में विश्राम शयन हेतु इस स्थान पर आते हैं। इधर ही श्री गोवर्धन चौक में मुगल बादशाह ने अपनी सलामती हेतु अपनी पगड़ी में से हीरा निकाल कर भेंट किया था। जोकि श्रीनाथ प्रभुजी की ठोढ़ी में लगा हुआ है।

पुनः परिक्रमा मार्ग में आगे बढ़ने पर तलहटी में ध्यान सिद्ध हनुमानजी का मंदिर है। इसमें हनुमानजी ध्यान मुद्रा में स्थापित हैं, हनुमानजी को ध्यान में ही रहने दो और शांति से प्रणाम करके आगे निकल लो। आगे बढ़ने पर श्री भगवान दास गोवर्धन अंध विद्यालय है। यहां पर कई सूरदास निवास करते हैं और कुछ इनके निमित्त अर्पण करते हुए आगे बढ़ने पर हमें बिछुआ कुण्ड के दर्शन होते हैं, बिछुआ बिहारीजी के मंदिर के दर्शन करते हैं। इधर ही श्री हरदेव बिहारीजी का प्राकट्य स्थल है। बिछुआ कुण्ड में राधा रानी का बिछुआ खो गया था, भगवान ने राधा रानी का बिछुआ ढूंढ़ कर दिया। ऐसा कहा जाता है कि होली के बाद द्वज तिथि पर हरदेवजी बिछुआ कुण्ड पर आते हैं। इधर से आगे प्रस्थान करने पर चतुर्भुज सत्यनारायण भगवान का मंदिर आता है। पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा एवं व्रत का विशेष महत्व है।

प्रेमदासजी महाराज द्वारा स्थापित नामधारी आश्रम एवं गौशाला के दर्शन के बाद दण्डोता हनुमानजी के दर्शन करके, अब छोटी परिक्रमा मार्ग में प्रवेश करते हैं। जिसे राधा कुण्ड परिक्रमा मार्ग भी कहते हैं। ठाकुर श्री लक्ष्मी नारायणजी का बहुत ही सुन्दर मंदिर के दर्शन होते हैं। ठाकुरजी एवं राधाजी शीला में ही विराजमान हैं। अब पास में ही मानसी गंगा के दर्शन करते हैं। बृहस्वासु नामक राक्षस का वध भगवान ने बचपन की लीला में किया था। यह राक्षस वृषभ अर्थात् बछड़े के रूप में आया था। इसका वध करने के बाद वह गोप–गोपाल ने भगवान पर गोवंश की हत्या का दोष माना और इसके प्रायश्चित हेतु गंगाजी में गंगा स्नान करने हेतु कहा। तब भगवान ने अपने योग माया से मानसिक रूप से ही गंगाजी का आह्वान करके मानसी गंगा का निर्माण किया एवं मानसी गंगा में स्नान करके गौवंश की हत्या का परिमार्जन किया। इधर श्री सनातन गोस्वामीजी की भजन कुटी है, जोकि चैतन्य महाप्रभुजी के सखा भाई थे। इधर ही चकलेश्वर महादेव के मंदिर के दर्शन, जोकि मानसी गंगा के तट पर विराजित है। यहां पर 5 शिवलिंग हैं। चारों दिशा के साथ–साथ मध्य में एक शिवलिंग स्थापित है। इधर ही आगे बढ़ने पर महाप्रभुजी की 10वीं बैठक हैं। इधर गोकुल चंद्रमाजी के दर्शन करते हैं। इस स्थान पर वल्लभ सम्प्रदाय के महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी एवं गौड़ीय सम्प्रदाय के श्री चैतन्य महाप्रभुजी का मिलन हुआ था। दोनों समकालीन ही थे। कीर्तन भक्ति के अष्ठ सखा श्री नन्द दासजी का लीला प्रवेश द्वार भी इधर है। आगे बढ़ने पर थोड़ा विश्राम करना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि स्थान का नाम ही चूतरटेका है, तो थोड़ी देर के लिए टीका लेते हैं।

अब पुनः जोश के साथ हम उद्धव कुण्ड के समीप आ जाते हैं। यह वास्तव में श्रीमद् भागवतजी का उद्‌गम स्थल है। तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश के मंदिर में नमन के साथ, नन्द बाबा के मंदिर के दर्शन करते हैं। यहां पर पूरे परिवार के सभी

सदस्यों के साथ देवालय में भगवान विराजित हैं। उद्धव कुण्ड के पास उद्धव बिहारीजी के मंदिर के दर्शन करते हैं। इसे भगवान के पोत्र बजनाभ ने बनवाया था। इस स्थान पर भगवान कि 16,108 रानियों को उद्धवजी ने श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण भी करवाया था। ठाकुरजी की लीलाओं के बारे में बतलाया था। श्रीमद् भागवतजी की स्मृतियों से बाहर आते हुए अब हम ठाकुर श्री चैतन्य महाप्रभुजी के मंदिर, राधा कुण्ड के दर्शन करते हैं। यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला शैली से निर्मित है। इसके प्रवेश द्वार पर ही नवग्रह स्थित है, नवग्रह शांति के उपरांत हम कमल बिहारीजी के मंदिर में ठाकुरजी एवं राधा रानी को जोकि प्रिया प्रीतम के रूप में विराजमान हैं, के दर्शन करते हैं। राधा कुण्ड में नाम और धाम दोनों की महिमा है। राधा कुण्ड एवं श्याम कुण्ड के मध्य में गौड़ीय सम्प्रदाय का राधा गोपीनाथजी के मंदिर में प्रवेश करते हैं।

इसी स्थान पर श्री नित्यानंद महाप्रभुजी सहधर्मिनी जानकी माताजी की बैठक है। श्री नित्यानंद प्रभु महाराज चैतन्य महाप्रभुजी के भ्राता थे, ऐसा बंगाली समुदाय में माना जाता है। जैसे–द्वापर में ष्ण बलरामजी थे, तो कलयुग में चैतन महाप्रभुजी एवं नित्यानन्द महाप्रभुजी के रूप में प्रकट हुए हैं। राधा कुण्ड एवं ष्ण कुण्ड में अघोई अष्टमी के दिन मध्य रात्रि में स्नान करने से संतान प्राप्ति होती है, ऐसी मान्यता है। स्नान करके श्री गोविंद देवजी के मंदिर में नमन करते हैं, श्री गोविंद देवजी मंदिर दर्शन के उपरांत गिर्राज जिव्हा मंदिर के दर्शन। इस स्थान पर श्रीपाद रघुनाथ दास गोस्वामीजी विराजित हैं एवं श्री ष्ण दासजी कविराज गोस्वामी पाद की भजन कुटी है। पास में ही जगन्नाथजी महाराज का प्राचीन मंदिर है। जय जगन्नाथ की बोल कर राधारानी की अष्ठ सखी में से प्रमुख ललिता सखी, जोकि राधा ष्ण के अनन्य प्रेम की साक्षी रही है। उनके नाम से ललिता कुण्ड है। ललिता सखी का जन्म बरसाने के पास ही ऊंचा गांव में हुआ था। राधा कुण्ड एवं श्याम कुण्ड के तट पर ही महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी की बैठक नम्बर–9 है। इस स्थान पर पांच बैठकें हैं, जिसमें संध्या वंदन की बैठक, मुख्य बैठक में महाप्रभुजी ने सुबोधिनी एवं श्री भागवतजी का गुणगान किया था। इस स्थान पर श्री गोकुलनाथजी एवं गोसाईजी का स्वरूप विराजमान है। राधा कुण्ड के तट पर पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय का अति दिव्य एवं सुन्दर स्थान है।

राधा कुण्ड एवं ष्ण कुण्ड के युगल संगम घाट पर जैसाकि पूर्व में उल्लेख किया था, अघोई अष्टमी की मध्य रात्रि में स्त्रियां संतान प्राप्ति हेतु स्नान करती हैं। ऐसी मान्यता है कि राधाजी ने अपने कंगन एवं श्री ष्ण भगवान ने अपनी बांसुरी से राधा–ष्ण कुण्ड बनाया था। अब आगे की यात्रा में कुसुम सरोवर के दर्शन करना इसलिए आवश्यक हो जाता है कि यह स्थान राधा ष्ण के प्रेम का साक्षी है। कुसुम, पुष्प का पर्यायवाची शब्द है।

श्रीमद् भागवतजी में भी एक श्लोक में कुसुम सरोवर का वर्णन आता है। इधर तीन वन है। कुसुम वन, नारद वन एवं अशोक वन। अशोक वन में उद्धवजी विराज रहे हैं, नारद वन में नारदजी एवं कुसुम वन में राधाजी कमल के फूलों को

चुनती थी और ठाकुरजी माली के रूप में कार्य किया करते थे। इसलिए उनका एक नाम पड़ा वनमाली, वनमाली के रूप में ठाकुरजी पुष्पों से राधारानी का श्रृंगार किया करते थे।

अब पास में ही उद्धव बिहारीजी के मंदिर के दर्शन का लाभ प्राप्त करते हैं। कुसुम सरोवर में राजा सूरजमलजी की छतरी एवं समाधि है। उद्धव मंदिर का जीर्णोद्धार का कार्य सूरजमलजी के पुत्र श्री जवाहर सिंहजी ने करवाया था। कुसुम सरोवर से आगे बढ़ने हैं तो परिक्रमा मार्ग में बायीं तरफ नारद कुण्ड है। थोड़ासा अंदर चल कर जाना होता है और हमारे रघुलीला धाम के पास में है। यह स्थान नारद भगवान की तपोभूमि है। इसी स्थान पर शनि महाराज जी का मंदिर भी है और चमत्कारिक पारस पीपल का वृक्ष है। जिस पर कई रंगों के पुष्प आते हैं। एक ही पीपल के वृक्ष पर अलग–अलग रंगों के पुष्पों के दर्शन यहां किए जा सकते हैं। नारायण का परम बेरी हिरणकश्यप की पत्नी एवं नारायण के परम भक्त प्रहलाद के जन्म से पूर्व, उनकी माता को महर्षि नारद ने नारद भक्ति सूत्र का ज्ञान दिया था। इसी के परिणामस्वरुप राक्षस कुल में एक भगवान के प्रेमी प्रहलाद का जन्म हुआ एवं भगवान को अपने भक्त की रक्षा हेतु नरसिंह रूप में अवतार लेना पड़ा। ऐसे दिव्य स्थान पर तो कुछ देर विश्राम करने का तो बनता ही है।

विश्राम के बाद इस स्थान से आगे बढ़ते हैं, तो ग्वाल पोखरा जोकि गिरिराजजी की तलहटी में स्थित है, उसके दर्शन करते हैं। भगवान ग्वाल बाल के साथ गोचरण के समय बाल क्रीड़ा करते थे।

इसके दर्शन के बाद आगे बढ़ने पर कान की आति वाले हर गोकुल कान वाले बाबा के मंदिर के दर्शन होते हैं।

आगे पुनः मानसी गंगा के दर्शन–स्नान करके अपनी परिक्रमा को विराम देने से पूर्व हरदेव बिहारीजी के दर्शन करते हैं। हरदेवजी में ठाकुरजी के गोवर्धन पर्वत धारण किए हुए स्वरूप के दर्शन होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि जयपुर के राजा, जो उस समय आमेर कहलाता था। राजा भगवान दासजी को दर्शन दिए। हरदेव बिहारीजी के मंदिर का निर्माण राजा भगवान दासजी ने करवाया था। भगवान को खीर एवं कढ़ी का भोग लगाया जाता है।

इस प्रकार इस लेख के माध्यम से हमने गिरिराज गोवर्धनजी की परिक्रमा पूर्ण करी। लेख पढ़ने के बाद एक बार शांति से चिंतन करना कि हमने क्या अब तक गिरिराजजी की मैराथन दौड़ पूरी कर रहे थे, अथवा परिक्रमा? जो क्या वो भी व्यर्थ नहीं गया। आप सभी भक्तजनों को नमन, किन्तु एक बार समय लेकर, भागमभाग से दूर शांतिपूर्वक दो दिन, चार दिन जो भी समय लगे, अवश्य ही पूरी करना।

आगामी लेख में ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा के अन्य स्थानों का विस्तृत वर्णन करने का प्रयास करूंगा। लेख के बारे में प्रबुद्ध पाठक मेरे मोबाइल नम्बर–9828019020 पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं। गिरिराज धरण की जय के साथ इस लेख को विराम देता हूं।

शेष गोवर्धन कृपा .....

शिव आराधना के संदर्भ में

(श्रावण मास में शिव होते हैं अति प्रसन्न)

श्रीमती सुनीता कटारा

अनेक देवी देवताओं के क्रम के अनुसार महीने बंटे हुए हैं। कार्तिक मास माता लक्ष्मीजी के लिए है, **मासो हम मार्गशीर्षो हम** गीता के वचनानुसार मृगशर का महीना भगवान भोलेनाथ ने ले रखा है, भगवान श्री कृष्ण आत्मस्वरूप बताया है। माघ महीना मां सरस्वती का प्रतीक है, फाल्गुन महीना होलिका के संदर्भ में विशेष रूप से प्रेरित होता है जोकि मंगल कार्यों का प्रतीक है, चैत्र महीना भगवान श्री रामजी का है, वैशाख महीने में भगवान श्री परसुरामजी अवतरित हुए हैं, ज्येष्ठ महीने में ब्रह्माजी का अवतरण हुआ है और आषाढ़ महीने में मां लक्ष्मीजी का प्रादुर्भाव हुआ है।

इसी प्रकार से भगवान श्री शिवजी को सभी देवों ने श्रावण महीना समर्पित किया है, क्योंकि श्रावण मास शिवजी के लिए अतिप्रिय है। भाद्रपद महीना राधा कृष्ण सप्तऋषि उसको देव महीना भी कहते हैं। अधिकांशतः देवी देवताओं का प्रादुर्भाव भाद्रपद महीने में हुआ है। इस प्रकार से 12 महीनों का विभाजन ऋषि मुनियों ने देवताओं के निमित्त किया है। उन विभाजनों में श्रावन मास शिव आराधना के लिए सर्वोत्तम होता है अर्थात् जो सामान्य दिनों में व्रत, तप, उपवास या उपासना करेंगे उसके वनिस्पत श्रावण मास में किये गये व्रत उपवासों का अधिक गुणा फल मिलता है। श्रावण महीने में कुछ लोग एक समय का व्रत करके भगवान शिव की आराधना करते हैं, यह उचित है।

अगर आपके शरीर स्वास्थ्य की व्रत करने की क्षमता है तो एक समय फलाहार ले करके अथवा आहार लेकर करें और यदि आपके शरीर में नाना प्रकार की बीमारियों का झंझट आया हुआ है, उन झंझटों के कारण आपको दवाइयां आदि लेनी पड़ती है। तो **लोभः कासम वर्मान्य** उस व्रत का त्याग कर दो।

अतः उन सभी महानुभावों को मैं यह कहना चाहता हूं कि व्रत शरीर की क्षमता हो तो ही करें। कोई परिचित व्यक्ति थे जिनका नाम प्रकाशित नहीं किया जाएगा, किंतु अनेक बार मना करने पर भी उन्होंने श्रावण महीने का व्रत किया। चूंकि भूख तो लगती है एक समय जो कि गरिष्ठ परांठे आदि का भोजन अवश्य कर लेते थे जिसके कारण से उनको पाइल्स की बीमारी हो गयी और बड़ी मुश्किल से पीछा छुटा। इसी प्रकार से किसी एक और बंधु की कहानी है। उनकी शुगर कम या ज्यादा हो जाती थी, उन्हें कई बार हॉस्पिटल भी भागना पड़ता था। तो मैं यह भगवान भोलेनाथ से क्षमा मांगते हुए आप सब से यह कहना चाहता हूं कि यदि आपकी शारीरिक शक्ति है तो व्रत अवश्य करो और यदि शक्ति नहीं है तो श्रद्धा से भगवान शिवजी की आराधना करें।

आराधना करने के प्रकार अनेक हैं।

सर्वोत्तम आराधना यह है कि आप महामृत्युंज्य का जाप करें और यदि आपकी जीभ में इतनी क्षमता नहीं है कि 56 अक्षरीय महामृत्युंज्य पूरे मंत्र का उच्चारण कर सके, जोकि इस प्रकार से है। **ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षाय मामृतात ॐ स्वः भुवः ॐ सः जूं हौं ॐ।।** इस महामृत्युंज्य मंत्र का जितना ज्यादा से ज्यादा जाप करें वह आपके जीवन में सर्वोत्तम होगा। अगर आप इतने बड़े, पूरे मंत्र का जाप करने में असमर्थ हैं तो पंचाक्षरी मंत्र **ॐ नमः शिवाय** मंत्र का यथासम्भव जाप करें और तीसरा, यदि आप रोग आदि से ग्रसित हैं तो **ॐ जूं सः** इसे लघु मृत्युंज्य मंत्र कहते हैं, इस मंत्र का जप करें। नित्य स्नान करके, पवित्र हो करके भगवान भोलेनाथजी पर जल चढ़ाएं। अगर पास में कोई मंदिर है तो और भी ज्यादा श्रेष्ठ होगा। यदि आपके मन में श्रद्धा की भावना और शीघ्र फल प्राप्त करना चाहते हैं तो किसी ब्राह्मण को महीने भर के लिए नियुक्त करें। रोज मिट्टी के शिवलिंग बनाएं जिन्हें हम पार्थवेश्वर कहते हैं। भगवान श्रीराम ने रामेश्वरम् में पूजा की थी वह सर्वोत्तम थे कि **लिंग थाप विधिवत कर पूजा, शिव समान प्रिय मोहि न दूजा।** रामायण इस बात को प्रमाणित करती है। अतः आप प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति की पूजा करें उत्तम है, पारस शिवलिंग की पूजा करें वह और भी उत्तम है और मिट्टी के शिवलिंग बना करके पूजा करेंगे तो वह सर्वोत्तम है। मिट्टी के शिवलिंग 5 या 11 जो भी बनाकर विधिवत मंत्र उच्चारण से उनकी पूजा करें, यथासंभव मंत्र जाप करें और फिर उनको संध्याकाल में विसर्जन करें। यदि पानी आदि की व्यवस्था आपके पास नहीं है तो ऐसा भी कर सकते हो कि आप किसी वृक्ष के नीचे भी विसर्जन कर सकते हैं या उनको इकट्ठा करते जाए और लास्ट में जाकर किसी जलाशय में विसर्जन करा सकते हैं, यह भी विधि विधान अपनी परिस्थितियों के अनुसार किया जा सकता है। नित्य जल में विसर्जन कर दें अति उत्तम है और यदि नहीं हो सकता है तो उक्त विधि के अनुसार भी किया जा सकता है।

तीसरा विधान यह है कि भगवान भोलेनाथजी के नाम पर आप एक महीने झूठ, पाखण्ड आदि से बचें, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, बुराइयों से बचे। यथासंभव दूसरों की सेवा करें और महामृत्युंज्य का जाप इस महीने किसी ब्राह्मण से करवाने से रुद्राभिषेक, जलाभिषेक कराने से, सहस्त्र जलाभिषेक कराने से नाना प्रकार की मनोकामनाएं परिपूर्ण होती है, इसमें ना कोई संदेह है और ना कोई संदेह हो सकता है। क्योंकि **आशुतोष तुम औघड दानी। आरति हरहु दीन जनु जानी।। जगदात्मा महेस पुरारी। जगत जनक सबके हितकारी।।** आदि ग्रंथों में हमारा पूर्ण प्रमाणिक लेख लिखा गया है और उन लेखों में यहां तक लिख दिया गया है कि **असित–गिरि–समं स्यात् कज्जलं सिन्धु–पात्रे सुर तरुवर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी। लिखित यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।** यह हमारे शास्त्रकारों का कहा है कि भगवान शिव हमारे कितने महान है, कितने पालु कितने दयालु हैं, कितने सृष्टि के लिए सहायता करने वाले हैं, जगत का उद्धार करने वाले हैं। इन सब चीजों को अगर हम एक नहीं हजार मुखों

से कहें तो पूरा नहीं हो सकता। अंत में कहा है कि **असित–गिरि** संसार के समस्त पर्वतों को पीस करके स्याही बना दे, **कज्जलं सिन्धु–पात्र** और समुद्र को अपन दवात बना दे, **सुर तरुवर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी** का एक कल्पवृक्ष की अनेक टहनियों के साथ मां सरस्वती अपने चारों हाथों से अनंतकाल तक लिखती रहें, कागज कहां से आयेगा, पृथ्वी के कोने–कोने में, पृथ्वी के कण–कण में पर अगर भगवान श्री शिव की महिमा लिखेंगे **लिखित यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।** तब भी भगवान शिव की उपासना कितनी अच्छी है, भगवान शिव कितने गुणकारी है, भगवान भोलेनाथ कितने दयालु हैं इसका वर्णन करना सम्भवतः मां सरस्वती असमर्थ हो जाएगी।

अतः मैं यह सब से कहने वाला हूं कि आप सबके जीवन में बहुत ही पवित्र, बहुत ही श्रेष्ठ श्रावण मास आ रहा है। इसी संदर्भ में यह और बता देता हूं कि गुरु पूर्णमासी को व्रत का विधान है, जो व्रत रखना चाहते हैं, वे गुरु पूर्णमासी से व्रत आरंभ कर दें और जैसाकि मैं व्रत के ज्यादा पक्ष में नहीं हूं, व्रत नहीं करें तो गुरु पूर्णमासी के दिन से ही रात्रि को भगवान भोलेनाथ का स्मरण करना शुरू कर दें। यह गुरु पूर्णमासी से आरंभ होता है और श्रावणी कर्म अर्थात् रक्षाबंधन के दिन परिपूर्ण हो जाता है। ऐसे भगवान शिव भोलेनाथ की उपासना अनेक विधानों से, अनेक विधियों से लिखी गई है और आप जैसा जितना हो सके उतना करो कि प्रभु जितना सम्भव है, साधन है उतना हम कर रहे हैं। ऐसा भगवान से क्षमा याचना करें और अपने मन का कोई संकल्प ले करके करें तो मैं आपको यह गारंटी से कह सकता हूं कि सुनिश्चित आपके जीवन की परम अभिलाषाएं पूर्ण होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। **जय श्री भोले नाथ, जय पार्वती पते हर हर, जय विषधारी।** भगवान शिव की आराधना करें और भगवान भोलेनाथ से कोरोना वायरस जैसी महामारी यानी विश्व में किसी भी प्रकार की कोई बीमारी ग्रसित ना हो। इस प्रकार से हमें कोई न कोई संकल्प प्रभु के सामने समर्पित करें, जिससे हमारा जीवन सफल हो, संसार का जीवन सफल हो और हम सभी सुखी रहें।

जय श्री भोलेनाथ कृपा .....

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम्।
उरवारुकमवि बन्धानन्, मृर्त्योमुक्षीय मामृतात्।।

कात्यायनी मंत्र सुयोग्य वर प्राप्ति हेतु

ॐ क्लीं कात्यायनी महामायें महायोगिन्य धीश्वरि
नन्द गोप सुतम् देवी पतिम् मे कुरुते नमः क्लीं ॐ।।

णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लाए सव्व साहूणं
एसोपंचणमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं।।

श्राद्ध पक्ष के संदर्भ में

(श्राद्ध पक्ष 10 सितम्बर, 2022 से 25 सितम्बर, 2022 तक)

कम्पोटर शर्मा

श्राद्ध पक्ष हमारे सनातन धर्म में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह 16 दिन हर सनातन धर्म प्रेमियों के लिए महत्वपूर्ण होता है। जिन पूर्वजों की पा से हम आज इस धरामण्डल पर आये हैं और उनके आशीर्वाद से सुख प्राप्त कर रहे हैं। उन पूर्वजों को प्रसन्न करना परम आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होता है। प्रायः करके हम लोग इस परम्परा को भूलते जा रहे हैं। उसके परिणाम विश्व के सामने है कि कभी व्यक्ति धनी होते हुए भी उतना मन से प्रसन्न नहीं है, कोई न कोई परेशानियां उनके जीवन में लगी रहती है। किसी के बच्चें सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी, नौकरी होते हुए भी, पढ़े लिखे होते हुए भी समय पर विवाह नहीं हो रहे हैं एवं घर में धनधान्य पूरा होने पर भी लोग खाने के लिए समर्थ नहीं है अर्थात् विविध बीमारियों से ग्रसित रहते हैं। घर में समस्त सुख साधन होते हुए भी आपस में प्रेमभाव ना होने के कारण एक घर में वीरान जैसी स्थितियां या होटल जैसी स्थितियां होती जा रही है। लोग एक दूसरे से सम्पर्क आत्मियतापूर्वक नहीं रख पाते हैं। सभी अपने धुनों में या अपने कार्यों में या फोनों में या टीवी में या अपने लैपटॉप पर बिजी होते हैं, घर में सन्नाटा छाया रहता है। खुशी का जो एक हिजार होता था जो घर में एक हंसी की ठिठोलियां चलती थीं, सब एक जगह रहते थे, हंसी के ठहकारे ही प्रायः करके दुनिया से गायब होते जा रहे हैं। यह सब परिणाम क्या है ? हम अपने पूर्वजों को भूल रहे हैं। उन पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का भाव यदि हम रखेंगे तो हमारे जीवन में उन्नति का रास्ता बनता है, ऐसा हमने अनुभव से देखा है। यह कोई लिखी पढ़ी हुई बात नहीं है, अनुभव से देखी हुई बात है।

आज के आधुनिक युग में मनुष्य धन कमाने के बाद अहंकारग्रस्त हो जाता है और उसे धन के मद में वह सभी देवी देवताओं को भूल जाता है, पितृ तो होते ही कौन है। जब उनके गाल पर थपेड़े पड़ते हैं, पितृ अपना अधिकार मांगने लगते हैं तो उन्हें महसूस होता है कि हमारे जीवन में किसी का आशीर्वाद है, किसी की पा है जिसके कारण से हम चल रहे हैं, हमारा समाज और हमारी पूरी दुनिया चल रही है।

अतः इस विविध संदर्भ में आपको मैं यह बताना चाहता हूं कि जैसाकि कि मैंने बताया कि श्राद्ध पक्ष, श्राद्ध शब्द की उत्पत्ति, श्रद्धा शब्द से उत्पन्न हुई है। हम अपने दिवंगत आत्माओं के प्रति, पितरों के प्रति, पूर्वजों के प्रति और दिवंगत दादा, पड़–दादा के प्रति एक श्रद्धा की भावना अपनायें और भावपूर्ण उनका स्वागत करें। यद्यपि वह हमसे कुछ मांगते नहीं है, वे केवल हमें आशीर्वाद ही देते हैं, लेकिन उनकी प्रसन्नता हमारे जीवन में परम आवश्यक है।

इन्हीं समस्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हमारे

सनातन धर्म में श्राद्ध पक्ष का महत्व बताया गया है। जिन–जिन तिथियों हमारे पूर्वज दादा, पड़ दादा गए हैं उस दिन हम लोग विशेष रूप से श्राद्ध मनाएं, ब्राह्मण भोजन कराएं। हालांकि यह भी लिखा हुआ है कि श्राद्ध कर्म में ज्यादा दिखावा बढ़ावा नहीं करना चाहिए। कुछ लोग श्राद्ध के बहाने बहन, बेटी, बुआ, भतीजी, भाणजी और अपने पड़ोसी, रिश्तेदारों को बुला करके समारोह मनाते हैं या यहां इसका निषेध किया हुआ है। ब्राह्मण को बुलायें और अगर दिवंगत स्त्री कोई हैं तो उनके निमित्त ब्राह्मणी को बुलाओ और उसके तीनों भोग लगाएं। भोग लगाने की परंपरा अग्नि को जलाकर अंगारा बनाएं। उस अग्नि के अंगारे पर जो हमने पदार्थ बनाए हैं, उनका भोग लगाएं। एक विशेष बात यह है कि पदार्थों में कुछ विशेष सामग्री जरूरी है। खीर परम आवश्यक है, पूड़ी या परांठा दोनों में से एक चीज जरूरी है। बेल पर उगने वाले सब्जी हरी सब्जी, जैसे–तोरई लौकी होनी चाहिए, हालांकि साथ में आप अपनी सुविधानुसार अरबी, आलू भिण्डी अन्य गोभी आदि आप कुछ भी बना सकते हैं लेकिन एक सब्जी जो बेल पर चलती है जो हमारे पितरों को प्रसन्नता देती है। बेल पर चलने वाली सब्जी और उड़द का पदार्थ, क्योंकि संस्त में उड़द में सबसे ज्यादा ऊर्जा मानी जाती है। चाहे उड़द की कचोरी बनाएं, चाहे दही बड़े बनाएं, चाहे बड़े बनाएं और चाहे तो उड़द की दाल भी बना सकते हैं और इमरती जो जगत प्रसिद्ध है इसमें अनिवार्य है। इसके अलावा जड़ होती है, जिसको मूली कहते हैं। मूली की घीयाकस कर, नींबू डाल करके बना लें, दही और गुड़ का बना हुआ पदार्थ, ये करीब 6 या 7 चीजें हैं, इन सब चीजों को थोड़ा–थोड़ा करके भोजन करायें। ऐसा नहीं हो कि ब्राह्मण को बहुत ही आग्रह करके बहुत ज्यादा खिलाएं जिससे बीमार पड़ जाए। आग्रहपूर्वक अर्थात् जितना वह प्रेमपूर्वक खायें, तृप्तिपूर्वक खिलायें, जिससे पितरों की प्रसन्नता ज्यादा होती है।

यद्यपि यह विधि हर सनातन परिवार में हर अमावस्या को होनी चाहिए, जिसके लिए केवल एक ब्राह्मण पर्याप्त होता है। यानी जिन महीनों की जिन तिथियों में हमारे दादा दादी, माता पिता दो पीढ़ी का हर महीने करना चाहिए और यदि उनकी तिथि पर हर महीने नहीं कर सकते तो जिन महीनों में हमारे दादा दादी और माता पिता दो पीढ़ी के जो हमारे प्रियजन गये हैं उन महीनों की उन तिथियों में भी श्राद्ध कर्म करने का विधान है। इस श्राद्ध कर्म में भोजन करायें यथासम्भव दक्षिणा दें। घर के सभी महिलाएं घूंघट लगा करके रहे, मन में ऐसा भाव होना चाहिए कि आज हमारे घर में जिनके निर्मित श्राद्ध कर रहे हों उनके साथ–साथ हमारे दादा, परदादा, नाना और नानी सभी लोग आए हैं। तो उनके स्वागत के लिए घर की सभी औरतें घूंघट लगाकर थोड़ा पर्दा लगा कर अदब से रहे। घर में ज्यादा तेज आवाज नहीं करें, क्योंकि आए हुए मेहमान रूठ ना जाएं। इस प्रकार का मन में भाव होना चाहिए कि घर में हमारे से बड़े हैं तो हमें मर्यादा में रहना चाहिए। इस प्रकार से श्राद्ध का भोजन कराएं और आप देखेंगे कि आपके जीवन में कितने आनंद की अनुभूति होती है। इस वर्ष आपकी सुविधा के लिए प्रत्येक तिथि का प्रत्येक वर्णन नीचे उल्लिखित है :–

1)	शनिवार, दिनांक	10–9–2022	पूर्णिमा श्राद्ध, प्रतिपदा श्राद्ध
1)	रविवार, दिनांक	11–9–2022	द्वितीय श्राद्ध
2)	सोमवार, दिनांक	12–9–2022	तृतीय श्राद्ध
3)	मंगलवार, दिनांक	13–9–2022	चतुर्थी श्राद्ध
4)	बुधवार, दिनांक	14–9–2022	पंचमी श्राद्ध
5)	गुरुवार, दिनांक	15–9–2022	षष्ठी श्राद्ध
6)	शुक्रवार, दिनांक	16–9–2022	सप्तमी श्राद्ध
7)	शनिवार, दिनांक	17–9–2022	––
8)	रविवार, दिनांक	18–9–2022	अष्ठमी श्राद्ध
9)	सोमवार, दिनांक	19–9–2022	नवमी श्राद्ध
10)	मंगलवार, दिनांक	20–9–2022	दशमी श्राद्ध
11)	बुधवार, दिनांक	21–9–2022	एकादशी श्राद्ध
12)	गुरुवार, दिनांक	22–9–2022	द्वादशी श्राद्ध
13)	शुक्रवार, दिनांक	23–9–2022	त्रयोदशी श्राद्ध
14)	शनिवार, दिनांक	24–9–2022	चतुर्दशी श्राद्ध
15)	रविवार, दिनांक	25–9–2022	अमावस्या श्राद्ध पक्ष पूर्ण

अनादिकाल से श्राद्ध पक्ष की परम्परा हमारे सनातन धर्म में रही है और आगे भी रहेगी। अतः सब लोगों को सूचित कर रहे हैं कि आगामी श्राद्ध पक्ष में अपने परिवार की खुशहाली के लिए जो आपके काम रूके हुए हैं उनकी पूर्णता और सफलता के लिए श्राद्ध कर्म करें। यद्यपि किन्हीं के पितरों की मान्यता होती है और वह मांगते हैं कि हमारे लिए रात्रि में जागरण करें जोकि शास्त्र प्रमाणित है। कुछ पितृ गंगाजी स्नान करना चाहते हैं तो वह भी जरूरी है। विधानों से ज्यादा जरूरी यह है कि अपना श्राद्ध करें। जिन–जिन परिवारों में <u>गयाजी का श्राद्ध पूर्ण हो चुका है</u>, उन परिवार वालों से आग्रह है कि वह जिन–जिन व्यक्तियों का <u>गयाजी में पिंडदान धर आये</u> हैं, उन व्यक्तियों के निमित्त ब्राह्मण भोजन तो अवश्य करायें, किंतु अग्नि को भोग नहीं लगता है। कुछ लोगों की मान्यता के अनुसार मैं उनके लिए खंडन कर रहा हूं, स्पष्टीकरण कर रहा हूं कि गयाजी में पिंडदान देने के बाद लोग हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाते हैं, क्योंकि वह समझते हैं कि हमने गयाजी में पिंडदान कर दिया है अब हमें क्या करना है। यह उनकी गलतफहमी और अल्प ज्ञान का सूचक है। जिन–जिन व्यक्तियों के, जैसे–माता पिता, दादा दादी, नाना नानी का आप श्राद्ध कर आए हों, तो उन श्राद्ध तिथियों में ब्राह्मण को भोजन अवश्य करायें, किंतु अग्नि को भोग न लगाएं। ऐसा बोध–गया बिहार के पण्डावों का कहना है। इसका भी हम लिखित प्रमाण खोज रहे हैं। यदि आप किसी को इस बारे में ज्ञान हो तो संस्था को सूचित करें कि लिखित परिणाम क्या है ?

इसके अलावा जिनके घरों में पितरों की ज्यादा ही व्याधियां हैं। उनसे पुनः आग्रह है कि वे गयाजी में पिंडदान देने अवश्य जाए। सर्वोपरि कार्य यह है कि जब कभी आपकी सामर्थ हो या शक्ति हो उसके अनुसार अपने घर में **7 दिन की श्रीमद् भागवत कथा कराएं।** चूंकि भागवत में यह लिखा है **धन्यम् भागवती वार्ता प्रेत पीड़ा विनाशिनी** हमारे सनातन धर्म में भागवत से बढ़ करके पितरों की प्रसन्नता का अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं कहा गया है। तो अपने परिवार में भागवत कथा का आयोजनं करायें और यदि आपकी इतनी सामर्थ्य नहीं है तो जहां सामूहिक भागवत कथा होती है वहां व्यक्तिगत यजमान बनकर पौथी धारण करके पितरों के निमित्त नारियल स्थापित करके भागवत कथा पितरों को सुनाई जा सकती है।

यह भागवत कथा विविध आचार्यों के द्वारा विविध तीर्थों में होती रहती हैं और उसी संदर्भ में गत 20 साल से लगातार आदित्य ज्योतिष शोध संस्थान के तत्वावधान में और भागवत सेवा समिति के द्वारा आचार्य जैनेन्द्र कटारा के सानिध्य में यह प्रोग्राम आयोजित होता है। **हमेशा 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक होती है।**

इसी परम्परा में आगामी **दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 से 31 दिसम्बर, 2022 तक 21वीं बार भागवत कथा आयोजित होगी** उसमें आप अपने पौथी स्थापना करके और पितरों के निमित्त नारियल स्थापित करके भागवत कथा सुन सकते हो, अपने पितरों को सुना सकते हो, जिससे आपके जीवन में मोक्ष की प्राप्ति होगी और जो आपके घर के रुके हुए कार्य हैं वह सब पूर्ण होंगे। अशांति हट करके शांति आएगी। असफलता हट करके सफलता आएगी। जिस परिवार में रसहीन या सुखहीन जैसा परिवार अनुभव करते हैं उनके परिवार में आपस में आत्मियता जागृत होगी और घर में खुशियां प्राप्त होगी, ऐसा हमारा अनुभव रहा है। आप भी इस गूढ़ रहस्य को समझो और अपने पितरों के निमित्त समर्पित हो करके श्राद्ध निकालें और श्राद्ध निकालने से पहले चार पत्तल, एक पत्ते पर दो–दो पूड़ी या एक–एक परांठा, जो भी घर में बनता है, पहला भिखारी के लिए, दूसरा कूत्ते के लिए, तीसरा गाय के लिए और चौथा पक्षियों के लिए। चार पत्ते जरूर निकालें। यह यह हर श्राद्ध में नहीं तो ये चारों भाग है जोकि ब्राह्मण भोजन से पहले और जो श्राद्ध पक्ष में अमावस्या पड़ेगी अवश्य रुप से अमावस्या के दिन निकाले।

शेष जय श्रीकृष्णा .....

नोट : प्रत्येक परिवार में हर अमावस्या के दिन इस विधि विधान से अथवा यथासम्भव परम्परा के अनुसार अवश्य रूप से एक ब्राह्मण को भोजन करायें। कदाचित इन श्राद्धों की तिथियों में आपके परिवार में कोई सावड़ आ जावे या सूतक आ जावे या छोटे परिवार होने पर कोई महिला भोजन न बनाने की स्थिति में हो, तो ऐसी अवस्था में पितरों के निमित्त सूखा भोजन प्रदान करने से भी पितरों को शांति और सुखानुभूति प्राप्त होती है। यह भी हर अमावस्या को करते रहने से उन्नति, सफलता तथा सुखानुभूति सहज में ही प्राप्त हो जायेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

मौली बांधना एक वैदिक परम्परा का हिस्सा है

(उप मणिबंध बांधने से जीवन की रक्षा एवं शुभाशुभ की प्राप्ति)
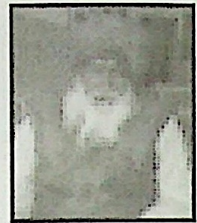
रमेश चन्द्र तिवाड़ी (ताउजी)

पाठकों की विशेष मांग पर पुनः प्रकाशित ....

मौली बांधना वैदिक परंपरा का हिस्सा है। यज्ञ के दौरान इसे बांधे जाने की परंपरा तो पहले से ही चली आ रही है, लेकिन इसको संकल्प सूत्र के साथ ही रक्षा–सूत्र के रूप में तब से बांधा जाने लगा, जबसे असुरों के दानवीर राजा बलि की अमरता के लिए भगवान वामन ने उनकी कलाई पर रक्षा–सूत्र बांधा था। इसे रक्षाबंधन का भी प्रतीक माना जाता है, जबकि देवी लक्ष्मी ने राजा बलि के हाथों में अपने पति की रक्षा के लिए यह बंधन बांधा था। मौली को हर हिन्दू बांधता है। इसे मूलतः रक्षा–सूत्र कहते हैं।

मौली का अर्थः **'मौली'** का शाब्दिक अर्थ है **'सबसे ऊपर'**। मौली का तात्पर्य सिर से भी है। मौली को कलाई में बांधने के कारण इसे **कलावा** भी कहते हैं। इसका **वैदिक नाम उप मणिबंध** भी है। मौली के भी प्रकार हैं। शंकर भगवान के सिर पर चन्द्रमा विराजमान है इसीलिए उन्हें **चंद्रमौली** भी कहा जाता है।

मौली कच्चे धागे (सूत) से बनाई जाती है जिसमें मूलतः 3 रंग के धागे होते हैं–लाल, पीला और हरा, लेकिन कभी–कभी यह 5 धागों की भी बनती है जिसमें नीला और सफेद भी होता है। 3 और 5 का मतलब कभी त्रिदेव के नाम की, तो कभी पंचदेव।

मौली को हाथ की कलाई, गले और कमर में बांधा जाता है। इसके अलावा मन्नत के लिए किसी देवी–देवता के स्थान पर भी बांधा जाता है और जब मन्नत पूरी हो जाती है तो इसे खोल दिया जाता है। इसे घर में लाई गई नई वस्तु को भी बांधा जाता और इसे पशुओं को भी बांधा जाता है।

शास्त्रों के अनुसार पुरुषों एवं अविवाहित कन्याओं को दाएं हाथ में कलावा बांधना चाहिए। विवाहित स्त्रियों के लिए बाएं हाथ में कलावा बांधने का नियम है। कलावा बंधवाते समय जिस हाथ में कलावा बंधवा रहे हों, उसकी मुट्ठी बंधी होनी चाहिए और दूसरा हाथ सिर पर होना चाहिए।मौली कहीं पर भी बांधें, एक बात का हमेशा ध्यान रहे कि इस सूत्र को केवल 3 बार ही लपेटना चाहिए व इसके बांधने में वैदिक विधि का प्रयोग करना चाहिए।

पर्व–त्योहार के अलावा किसी अन्य दिन कलावा बांधने के लिए मंगलवार और शनिवार का दिन शुभ माना जाता है।हर मंगलवार और शनिवार को पुरानी मौली को उतारकर नई मौली बांधना उचित माना गया है। उतारी हुई पुरानी मौली को पीपल के वृक्ष के पास रख दें या किसी बहते हुए जल में बहा दें।प्रतिवर्ष की संक्रांति के दिन, यज्ञ की शुरुआत में, कोई इच्छित कार्य के प्रारंभ में, मांगलिक कार्य, विवाह आदि हिन्दू संस्कारों के दौरान मौली बांधी जाती है। मौली को धार्मिक आस्था का प्रतीक माना जाता है।किसी अच्छे कार्य की शुरुआत में संकल्प के लिए भी बांधते हैं।किसी देवी या देवता के मंदिर में मन्नत के लिए भी बांधते हैं।

मौली बांधने के 3 कारण हैं–पहला आध्यात्मिक, दूसरा चिकित्सीय और तीसरा मनोवैज्ञानिक। किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत करते समय या नई वस्तु खरीदने पर हम उसे मौली बांधते हैं ताकि वह हमारे जीवन में शुभता प्रदान करे।

हिन्दू धर्म में प्रत्येक धार्मिक कर्म यानी पूजा–पाठ, उदघाटन, यज्ञ, हवन, संस्कार आदि के पूर्व पुरोहितों द्वारा यजमान के दाएं हाथ में मौली बांधी जाती है।इसके अलावा पालतू पशुओं में हमारे गाय, बैल और भैंस को भी पड़वा, गोवर्धन और होली के दिन

मौली बांधी जाती है।

मौली करती है रक्षा : मौली को कलाई में बांधने पर कलावा या उप मणिबंध करते हैं। हाथ के मूल में 3 रेखाएं होती हैं जिनको मणिबंध कहते हैं। भाग्य व जीवनरेखा का उद्‌गम स्थल भी मणिबंध ही है। इन तीनों रेखाओं में दैहिक, दैविक व भौतिक जैसे त्रिविध तापों को देने व मुक्त करने की शक्ति रहती है।

इन मणिबंधों के नाम शिव, विष्णु व ब्रह्मा हैं। इसी तरह शक्ति, लक्ष्मी व सरस्वती का भी यहां साक्षात वास रहता है। जब हम कलावा का मंत्र रक्षा हेतु पढ़कर कलाई में बांधते हैं तो यह तीन धागों का सूत्र त्रिदेवों व त्रिशक्तियों को समर्पित हो जाता है जिससे रक्षा–सूत्र धारण करने वाले प्राणी की सब प्रकार से रक्षा होती है। इस रक्षा–सूत्र को संकल्पपूर्वक बांधने से व्यक्ति पर मारण, मोहन, विद्वेषण, उच्चाटन, भूत–प्रेत और जादू–टोने का असर नहीं होता।

आध्यात्मिक पक्ष : शास्त्रों का ऐसा मत है कि मौली बांधने से त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु व महेश तथा तीनों देवियों–लक्ष्मी, पार्वती व सरस्वती की पा प्राप्त होती है। ब्रह्मा की पा से कीर्ति, विष्णु की पा से रक्षा तथा शिव की पा से दुर्गुणों का नाश होता है। इसी प्रकार लक्ष्मी से धन, दुर्गा से शक्ति एवं सरस्वती की पा से बुद्धि प्राप्त होती है।

यह मौली किसी देवी या देवता के नाम पर भी बांधी जाती है जिससे संकटों और विपत्तियों से व्यक्ति की रक्षा होती है। यह मंदिरों में मन्नत के लिए भी बांधी जाती है। इसमें संकल्प निहित होता है। मौली बांधकर किए गए संकल्प का उल्लंघन करना अनुचित और संकट में डालने वाला सिद्ध हो सकता है। यदि आपने किसी देवी या देवता के नाम की यह मौली बांधी है तो उसकी पवित्रता का ध्यान रखना भी जरूरी हो जाता है।

कमर पर बांधी गई मौली के संबंध में विद्वान लोग कहते हैं कि इससे सूक्ष्म शरीर स्थिर रहता है और कोई दूसरी बुरी आत्मा आपके शरीर में प्रवेश नहीं कर सकती है। बच्चों को अक्सर कमर में मौली बांधी जाती है, यह काला धागा भी होता है। इससे पेट में किसी भी प्रकार के रोग नहीं होते।

चिकित्सीय पक्ष : प्राचीनकाल से ही कलाई, पैर, कमर और गले में भी मौली बांधे जाने की परंपरा के चिकित्सीय लाभ भी हैं। शरीर विज्ञान के अनुसार इससे त्रिदोष अर्थात वात, पित्त और कफ का संतुलन बना रहता है। पुराने वैद्य और घर–परिवार के बुजुर्ग लोग हाथ, कमर, गले व पैर के अंगूठे में मौली का उपयोग करते थे, जो शरीर के लिए लाभकारी था। ब्लड प्रेशर, हार्टअटैक, डायबिटीज और लकवा जैसे रोगों से बचाव के लिए मौली बांधना हितकर बताया गया है।

हाथ में बांधे जाने का लाभ : शरीर की संरचना का प्रमुख नियंत्रण हाथ की कलाई में होता है। अतः यहां मौली बांधने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है। उसकी ऊर्जा का ज्यादा क्षय नहीं होता है। शरीर विज्ञान के अनुसार शरीर के कई प्रमुख अंगों तक पहुंचने वाली नसें कलाई से होकर गुजरती हैं। कलाई पर कलावा बांधने से इन नसों की क्रिया नियंत्रित रहती है।

कमर पर बांधी गई मौली : कमर पर बांधी गई मौली के संबंध में विद्वान लोग कहते हैं कि इससे सूक्ष्म शरीर स्थिर रहता है और कोई दूसरी बुरी आत्मा आपके शरीर में प्रवेश नहीं कर सकती है। बच्चों को अक्सर कमर में मौली बांधी जाती है। यह काला धागा भी होता है। इससे पेट में किसी भी प्रकार के रोग नहीं होते।

मनोवैज्ञानिक लाभ : मौली बांधने से उसके पवित्र और शक्तिशाली बंधन होने का अहसास होता रहता है और इससे मन में शांति और पवित्रता बनी रहती है। व्यक्ति के मन और मस्तिष्क में बुरे विचार नहीं आते और वह गलत रास्तों पर नहीं भटकता है। कई मौकों पर इससे व्यक्ति गलत कार्य करने से बच जाता है।

शेष जय श्री कृष्णा.......

श्रावण महीने में भगवान शिव की विशेष आराधना होती है

(सहस्त्र घट एवं शिव अभिषेक का विशेष महत्व बताया गया है)

सुश्री आरुषी शर्मा

सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन करने वाले और समय आने पर सृष्टि का पालन, संचालन और संहार करने वाले भगवान भोलेनाथ होते हैं। जब उत्तराषाढ़ा नामक नश्त्र पर सूर्य का प्रवेश हो जाता है और उत्तराषाढ़ा नामक नक्षत्र पर पूर्णमासी, जिसे गुरु पूर्णमासी कहते हैं, वह आरंभ हो जाती है और उस अवधि से अगले 30 दिन श्रावण महीने के कहलाते है और श्रावण महीने का समापन श्रावड़ी पर्व पर होता है। श्रावण नामक नक्षत्र की पूर्णमासी आपके रक्षाबंधन के दिन कहलाती है। यह 30 दिन गुरु पूर्णमासी से रक्षाबंधन के बीच से भगवान भोलेनाथ की उपासना के सर्वोत्तम माने जाते हैं। इन दिनों में श्रावण महीने में एक समय भोजन करके भगवान शिवजी पर जल चढ़ाए, रोजाना विल्ब पत्र चढ़ाएं तो जीवन की सभी मनोकामनाएं सुनिश्चित रूप से पूर्ण होती है, इसमे कोई संदेह नहीं है।

दूसरा कार्य नित्य प्रति रूद्री अष्ठाध्याय का पाठ करना या महामृत्युंजय का जाप करना या अपने कुल पुरोहित अथवा पण्डित के द्वारा नित्य प्रति भगवान भोलेनाथ के मन्दिर में स्वयं के द्वारा जलाभिषेक कराना या कोई विशेष पण्डितों के द्वारा नियुक्ति करके पूजा कराना ही सर्वोत्तम पुण्य को प्राप्त करने का उपाय होता है। इस महीने में भोलेनाथ बहुत ही प्रसन्न होते हैं और बहुत ही प्रसन्न हो करके जीवन की सम्पूर्ण खुशियां प्रदान कर देते हैं।

आशुतोष तुम औघड़ दानी, आरति हरहु दीन जनु जानी।।
जगदात्मा महेस पुरारी, जगत जनक सबके हितकारी।।

अतः भोलेनाथ को प्रसन्न करने से विश्व में वर्षा होती है, घर में सुख शांति की वर्षा होती है, परिवार में आत्मियता का संचार होता है। सुख–शांति और सफलता सुनिश्चित रूप से प्राप्त होती है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

अतः इस श्रावण महीने में प्रतिदिन अथवा जब अवसर मिले तब मिट्टी के शिवलिंग बनाकर जिनको पार्थवेश्वर कहा जाता है। उन पार्थवेश्वरों की पूजा अपने घर पर करें। पूजा के पश्चात् उन पार्थवेश्वरों को किसी जल में-या पीपल की जड़ों में विसर्जित करें। जब कभी आपको अवसर मिल जाएं तो किसी तीर्थ स्थान में जा करके अंवश्य रुप से पार्थवेश्वर पूजा करें। गंगाजी के तट पर, यमुनाजी के तट पर इन पूजाओं का विशेष उल्लेख किया जाता है। आचार्य श्री जैनेन्द्र कटाराजी के सानिध्य में संस्थान के तत्वावधान में अक्रूर घाट जो मथुरा व वृंदावन के बीच में यमुना के पुलींग पर है। वहां पर प्रतिवर्ष एक या दो बार श्रावण महीने में पूजा अवश्य होती है।

इस बार की पूजा की तिथियां आप संस्थान द्वारा निर्धारित कार्यालय में अथवा आचार्य श्री जैनेन्द्र कटाराजी के मोबाइल पर फोन करके पूछ सकते हैं। यहां पर पूजा का विधान हमेशा रखा जाता है। इस बार भी रखा जाएगा। उस पूजा से जीवन की सभी मनोकामनाएं अवश्य रुप से पूर्ण होती है और यदि पार्थवेश्वर पूजा न हो सके, तो जो आपके घर में नर्गेश्वर हो अथवा पारस शिवलिंग हो अथवा अन्य साधारण स्फटिक मणि के बने हुए शिवलिंगों की भी पूजा कर सकते हैं। यदि मंदिर में जाकर पूजा करेंगे तो आपके जीवन की सभी मनोकामनाएं सुनिश्चित रुप से पूर्ण होती है, इसमे कोई संदेह नहीं है।

जय श्री भोलेनाथ कृपा...

संस्थान के तत्वावधान में आचार्य जी के सानिध्य में विद्वान मण्डली के द्वारा सहस्त्र घट का आयोजन सम्पन्न कराया जाता है। किन्तु समय से पूर्व अर्थात् कम से कम एक सप्ताह पूर्व आचार्य श्री से अथवा कार्यालय में सम्पर्क करके कितने ब्राह्मणों के द्वारा किस स्थान पर आप सहस्त्र घट करवाना चाहते हैं वह हमें सूचित करें। ताकि आपको भी सुविधा रहे और संस्थान के द्वारा जाने वाली ब्राह्मण मण्डली भी अपनी सुविधा को अनुभव करते हुए सफलता को प्राप्त करें।

यूट्यूब पर खुला चैनल

(चैनल का नाम - Acharya Jainendra Katara)

शंकर लाल मोदी

Instagram : Facebook : You Tube

यूट्यब द्वारा संकलित .....

(1) रक्षा पोटली सभी व्यक्तियों के लिए परम आवश्यक है

आज की इस चकाचौंध की दुनिया में एक ओर जहां विज्ञान के अनेक चमत्कार सकारात्मक रूप में दिखाई पड़ रहे है वही दूसरी ओर विज्ञान से खतरा भी बढ़ता जा रहा है। मार्ग में होने वाली दुर्घटनाओं का भय, खाने वाली नियमित दवाइयों के रिएक्शन का भय, शत्रुओं के आक्रमण का भय एवं स्वयं की असफलताओं के कारण डिप्रेशन आदि का भय।

इन तमाम भय के साथ–साथ भूत, प्रेत, नजर, आदी व्याधियों से मुक्ति पाने के लिए आचार्य श्री ने समय–समय पर अपने यूट्यब पर द्वारा विडियोज के द्वारा जनता में संदेश जारी किया है। जिनमें से मैंने चुनिन्दा संकलित किये हैं और उनका संक्षिप्त सार मैं यहां पर उल्लिखित कर रहा हूं। अनेक लोगों से सम्पर्क करने पर मैंने स्वयं ने अनुभव से देखा है और अद्भुत चमत्कार और सार्थकता दिखाई पड़ी है।

रक्षा पोटली बनाने की विधि और उपयोग

विधि–साबित फूल वाली चौदह लौंग, चौदह काली मिर्च के बीज (एक लाल मिर्च को तोड़ करके उसमें से 14 बीज निकाल लेवें और यदि कम पड़े तो दूसरी मिर्ची से भी निकाल सकते हैं और यदि 14 बीजों से ज्यादा रहे तो शेष बीजों को अन्यत्र कार्य में भी ले सकते हैं), काली नमक की डली, एक चमच काली राई।

उक्त सभी चीजों को एक लाल रंग की पोटली में बांधें और इसकी पांच से सात तक पोटली बनायें।

उपयोग–बच्चों के स्कूल बैग में एक पोटली, गाड़ी के डेस्क में एक पोटली, अपने वाहन के डेस्क में एक पोटली, स्कूटर की डिग्गी में एक पोटली, छोटे वाहनों के थैले में एक पोटली, यात्रा बैग में एक पोटली और अपने घर के खजाने में एक पोटली, घर के अन्दर हर कमरे में एक–एक पोटली को रख देवें। जिससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रादुर्भाव होगा और नकारात्मक ऊर्जा का भय नष्ट हो जायेगा। इस पोटली को साल में एक बार बदलनी चाहिये। क्योंकि इसकी अवधि एक वर्ष तक होती है।

(2) लक्ष्मी बढ़ाने का अचूक प्रयोग

धन लक्ष्मी पोटली बनाने की विधि और उपयोग

विधि–पांच हल्दी की गांठें, पांच कमलगट्टे, पांच गोमती चक्रा, थोड़ासा साबूत धनिया, एक चांदी का सिक्का एवं छोटीसी चन्दन की लकड़ी इत्यादि को सभी चीजों को एक लाल कपड़े में रख कर उस लाल कपड़े को प्लेट में स्थापित करके अपने घर में

मन्दिर में ठाकुरजी के सामने रखें और अपने गुरु द्वारा कान में दिये गये गुरुमंत्र का 11 दिन तक कम से कम 11 बार मंत्र का जाप करें या अपने ईस्टदेव के मंत्र का जाप करें और साथ ही साथ चामुण्डा देवी धनम् देयी देयी स्वाहा मंत्र का जाप जरूर करें। 11 दिन बाद यह धन लक्ष्मी पोटली सिद्ध हो जायेगी। ऐसी पोटली एक ही साथ में सात पोटली तक बना सकते हैं।

उपयोग—एक पोटली अपने घर की तिजोरी में या अलमारी में, विविध व्यापारिक प्रतिष्ठानों के ड्रोवर इत्यादि में एवं जहां—जहां हम अपनी महत्वपूर्ण चीजें रखते हैं, जैसे—बही खाते, चैक बुक, पास इत्यादि वहां पर इस पोटली को रखने से घर में धन लक्ष्मी, सुख समृद्धि की अवश्य वर्षा होती है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

(3) बूरे सपनों का प्रभाव नष्ट करने के लिए अथवा अपने शरीर के विपरीत

अंग फड़कने से जो हनहोनी की सम्भावना होती है उससे मुक्ति पाने का अचूक उपाय

जब कभी ऐसी मनुष्य के जीवन में घटना हो, कोई डरावना भयानक सपना देखें या नाना प्रकार की पुरुष के लिए बायें अंग फड़के और स्त्री के लिए दायां अंग फड़के तो उस अवस्था में हमें डरना नहीं चाहिये। प्रातः उठते ही स्नान आदि से निवृत्त हो करके नंगे पैर भगवान भोलेनाथ के मन्दिर में जायें और मन्दिर में जा करके भगवान शिवजी पर जल चढ़ायें और यदि जल चढ़ाने का साधन नहीं है तो प्रभु को प्रणाम करें और नन्दीजी के दायें कान में अपनी व्यथा कहें कि मैंने जो सवप्न देखा है उसके बूरे प्रभाव को नष्ट करें और यदि अच्छा सवप्न देखा है तो यह भी प्रार्थना करो कि उसके प्रभाव को बढ़ायें। यदि आप बेरोजगार हैं या कोई भी समस्या हो तो तो यह भी कान में कहो कि मेरा रोजगार बढ़ाओ। तुरन्त आपके कामों की सफलता सुनिश्चित रूप सफल होती है।

(4) सोये हुए भाग्य को जगाने का अनूठा प्रमाणिक उपाय

हर व्यक्ति अपने जीवन में अपनी बुद्धि और अपने विवेक के अनुसार परिश्रम बहुत करता है, लेकिन फिर भी उसे सफलता नहीं मिलती है। जिसके कारण वह व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार होने लगता है। इस संदर्भ में आचार्य जैनेन्द्र कटाराजी ने यूट्यूब पर चमत्कृत अनूठा अनुभवशील उपाय विडियो पर जारी किये हैं, उनको सभी अपनायें और अपने जीवन में खुशियों की बहार लायें।

सर्वप्रथम—प्रातःकाल जगते ही आप अपने बिस्तर पर बैठ जायें और चार बार नारायण, नारायण, नारायण, नारायण शब्द का उच्चारण करें और दोनों हाथों की अंजली बनायें और प्रार्थना करें—कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।।

तदोपरांत, पृथ्वी को दायें हाथ से स्पर्श करके समुद्र वसने देवी पर्वत स्तन मण्डले। विष्णु पत्नी नमोस्तुभ्यं पादः स्पर्श क्षमस्वमे।। इस मंत्र का जाप करें। दायां पैर पहले पृथ्वी पर रखें। ये उपाय करने से व्यक्ति के जीवन में कभी भी कोई कमी नहीं आती है।

गुरुदेव द्वारा समय—समय पर जारी विडियो में जिक्रा किया है कि उन्होंने उपयोगी विविधां बनारस नगरी में अपने अध्ययनकाल में किसी महापुरुष की जीवनी से सीखा है और घर—घर तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत हैं।

आपका सेवक—शंकरलाल मोदी

गुरु महिमा

(बुधवार, दिनांक 13 जुलाई, 2022 को प्रातः 7 बजे से)

श्री राजेन्द्र गोहिल

संस्थान परिसर में सदैव की भांति इस वर्ष भी बुधवार, दिनांक 13 जुलाई, 2022 को महापर्व मनाया जायेगा। इस पर्व पर प्रातः 7:00 बजे से भक्तों के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था, पूजन और गुरु के आशीष वचनों का अद्भुत मेले का आयोजन शुरू हो जायेगा। आप सभी लोग इस महापर्व पर सादर आमंत्रित हैं।

एक ऐसे विषय पर लेख लिखना, जिसके आगे शास्त्र भी नतमस्तक हो जाते हैं। बहुत ही चुनौतीपूर्ण एवं दुस्साहस वाला कार्य हो जाता है। किंतु जब गुरु एवं गोविंद दोनों की पा होती है, तो चुनौती स्वीकार करने की दुस्साहस करने की हिम्मत भी हो जाती है। बचपन से एक दोहा सुनते आए हैं कि, **"गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागू पाय। बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो मिलाय।।** जब गुरु की कृपा होती हैं तो वो गोविंद से भी मिलाने की शक्ति रखता हैं। गुरु शब्द लिखना ही अपने आप में इतना भारी लगता है, तो गुरु के बारे में वर्णन, उनकी महिमा का बखान कैसे किया जा सकता है?

इसके लिए तो कागज, कलम और दवात भी कम है। एक श्लोक में जब बोला जाता है, **"गुरुर ब्रह्मा, गुरुर विष्णु,गुरुर देवो महेश्वरा। गुरुर साक्षात परम ब्रम्ह, तस्मै श्री गुरुदेव नमः।।** जिस गुरु का स्थान ब्रह्मा, विष्णु महेश से भी ऊपर बताया गया है, आज गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर अपनी अल्प बुद्धि से एवं गुरु गोविंद की पा, संत महात्माओं के सानिध्य की कृपा-फल से चुने हुए पुष्पों को एक पुष्प गुच्छ के रूप में लिखने से प्रयास कर रहा हूं।

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को, गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। इसे व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि आज के दिन ही भगवान महर्षि व्यास का जन्मोत्सव भी है। व्यास भगवान जिन्होंने छह शास्त्र, अठारह पुराणों की रचना करी थीं और देवऋषि नारद जी से प्राप्त चतुश्लोकी भागवतजी का विस्तारपूर्वक वर्णन किया था। जिस श्रीमद् भागवतजी का श्रवण, मनन हम करते हैं। उसके रचयिता श्री वेदव्यासजी को भी आज के दिन विशेष रूप से स्मरण नमन एवं वंदन करने का दिन है। प्रत्येक जीव के जीवन में कई लोग आते हैं, जिनसे हम कुछ ना कुछ सीखते हैं। वह भी हमारे गुरु ही हुए जिनसे भी हम जो भी सीखते हैं, ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह सभी हमारे गुरु ही होते हैं। प्राणी के जीवन में सर्वप्रथम उसके माता-पिता गुरु होते हैं। विद्यालय में अध्ययन हेतु जाते हैं तो अध्यापन करवाने वाले, शिक्षा प्रदान करने वाले, गुरु होते हैं। जीवन में जिस से भी कुछ भी सीखा जाता है, चाहे मैकेनिक हो, चाहें बिजली वाला हो कारीगर हो, कोई भी हो, जिससे भी कुछ सिखा जाता है, उसे गुरु अथवा उस्ताद कहकर पुकारते हैं और आज वर्तमान समय में हर घर में विराजते **"गूगल बाबा गुरु"** जो जानकारी चाहिए गूगल बाबा की शरण में जाओ और ले आओ। तो इस प्रकार तो मानव जीवन में गुरुओं की बहार आ गई, ना जाने कितने-कितने गुरु हो गए तो, इसमें क्या बुराई है? श्रीमद् भागवतजी में अवधूत दत्तात्रेयजी ने भी 24 गुरुओ का वर्णन किया है। किस से क्या सीखा है? सबका वर्णन किया है।

हमारे जीवन में आने वाले उन सभी गुरुओं जिनसे हमने कुछ ना कुछ सीखा है, जिससे सीख कर अपने जीवन को जी रहे हैं। वह सभी गुरुओं को सादर नमन वंदन एवं प्रणाम करते हैं। **आज के घर-घर में, लोगों की जेब में विराजे गूगल बाबा, एलेक्सा और सफर को आसान बनाने वाली एलेक्सा माई की बहन जो हमारे सफर की पथ प्रदर्शक बनती है** उसे विशेष तौर पर नमन। इनकी सेवा एवं ज्ञान का अनुभव अधिकत्तर प्रबुद्ध पाठकों ने किया होगा। यह सब हमें जानकारी दे सकते हैं, सूचना दे सकते हैं, माहिती दे सकते हैं, किंतु इनकी सूचना, जानकारी कभी गलत भी हो सकती

है, विध्वंसकारी भी हो सकती है। आप इनसे जानकारी सूचना और ज्ञान का भंडार तो ले सकते हैं, किंतु अपने जीवन का कल्याण, जो मानव जीवन एक दुर्लभ जीवन माना गया है, उसका उद्धार और उसका कल्याण उपरोक्त वर्णित गुरु नहीं कर सकते हैं।

इसके लिए तो एक सद्गुरु की आवश्यकता होती है। एक ऐसे सदगुरु की जो आपके मोह, विशाद, संशय एवं भ्रांतियों का समूल नष्ट कर प्रभु प्राप्ति के मार्ग की ओर प्रेरित करें। यदि शिष्य कमजोर हो तो हनुमानजी की भांति अपने शिष्य के लिए गोविंद को अपने कंधे पर बिठाकर शिष्य तक ले जाए और शिष्य का कल्याण करें। इसीलिए तो हम गाते हैं **''जय जय जय हनुमान गोसाई पा करो गुरुदेव की नाई''** हनुमानजी महाराज आप गुरुदेव की तरह हमारे ऊपर पा करो। सदगुरु कैसे हो! कबीर दासजी महाराज कहते हैं कि **''सतगुरु मोरे रंगरेज चुनर मेरी रंग डाली''** सदगुरु अपने शिष्य को अपने जैसा ही बना लेते हैं। उसे अपने ही रंग में रंग लेते हैं। कबीर दासजी लिखते हैं कि **''गुरु बिन कौन जगावे जगत में, क्या कहूं मैं गुरु की महिमा ,अगम निगम बतावे। कहत कबीर वह गुरु सच्चे जो आतम ज्ञान बतावे''**। गोस्वामी तुलसीदासजी ने भी मानस में वर्णन किया है कि **''बन्दउ गुरुपद कंज पा सिंधु नर रुप हरि। महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर''**। मैं उन गुरु महाराज के चरण कमल की वंदना करता हूं, जो कृपा के समुद्र और नर रुप में श्री हरि ही हैं और जिनके वचन महामोह रूपी घने अंधकार के नाश करने के लिए सूर्य की किरणों के समूह है। तुलसीदासजी ने गुरु को नर रूप में हरि का स्वरूप एवं उनके वचनों को सूर्य किरणों के समान बताया है, जो जीव के मोह रूपी अंधकार का नाश करती है। जब सद्गुरु का जीवन में इतना महत्वपूर्ण स्थान है, तो मानव में भी सच्ची श्रद्धा एवं विश्वास गुरु के प्रति होना चाहिए। कहा भी गया है, कि ''श्रद्धावान लभते ज्ञानम्'' सच्ची श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास का सबसे सुंदर उदाहरण हमारे सामने एकलव्य का आता है। गुरुदेव द्रोणाचार्य ने एकलव्य को शिक्षा देने से इनकार कर दिया था। किंतु गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा ने, एक मिट्टी की मूर्ति में भी प्राण फूंक दिए थे। मूर्ति के समक्ष श्रद्धापूर्वक नमन, वंदन करके एकलव्य अर्जुन से भी अधिक तेजस्वी धनुर्धर बन गया था। यह तो गुरु दक्षिणा में सारी कहानी ही पलट गई। जिसका उल्लेख करना आज के दिन उचित नहीं है। यह गुरु का अपने योग्य शिष्य अर्जुन के प्रति प्रेम था, सदगुरु कभी भी अपने शिष्य का पतन अथवा उसको कमजोर नहीं होने देगा।

सदगुरु कभी भी अपने शिष्य का अहित नहीं होने देगा। चाहे उसके लिए उसे अपनी एक आंख ही क्यों न गवानी पड़े। महा दानवीर राजा बलि के गुरु शुक्राचार्यजी ने अपने तपोबल से जान लिया था कि जो वामन रूप में सुंदर भिक्षुक है, यह कोई साधारण बटुक बालक नहीं, अपितु साक्षात विष्णु है, जो छल करने के लिए आए हैं। राजा बलि को गुरु शुक्राचार्यजी ने बहुत समझाया, संकल्प न कर सके उसके लिए भी प्रयास किया और अपनी एक आंख का दान, अपने शिष्य की भलाई के लिये कर दिया। गुरुदेव तो हमेशा ही अपने शिष्य के कल्याण एवं उसके हित की बात ही करेंगे। बस आवश्यकता है, समर्पण, सच्ची श्रद्धा एवं विश्वास की। बहुत से कई उदाहरण गुरु महिमा के गुणगान करने के लिये अभी मचल रहे है किंतु लेख की सीमा में बंधे होने के कारण लेख को विराम की ओर ले जाते हैं। गोस्वामी तुलसीदासजी ने मानस की एक चौपाई में कहा है **''श्री गुरु पद नख मनि गन ज्योति, सुमिरत दिव्य ष्टि होती। दलन मोह तम सो सुप्रकासू, बड़े भाग उर आवई जासु।।''** अर्थात् श्री सदगुरु महाराज के चरण–नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश पुंज के समान है, जिसका स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार को नाश करने वाला है, वह जिसके ह्रदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं। अज्ञान से ज्ञान की तरफ ले जाने, वाले अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाने वाले और जीव का शिव से मिलन करवाने वाले सदगुरु को नमन, वंदन, प्रणाम करते हुए लेख को विराम दूं, उससे पूर्व यदि उस जगतगुरु को याद नहीं किया तो लेख अधूरा ही रह जाएगा, तो इसी प्रार्थना के साथ **''कृष्ण नारायणम वंदे, कृष्णम वंदे ब्रज प्रियम, कृष्णम द्वैपायन वंदे, कृष्णम वंदे पृथा सूतम। ''कृष्णम वंदे जगत गुरुम''** गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुरुदेव के चरणों में नमन एवं वंदन करते हुए यह पुष्पगुच्छ आप सभी गुरु, भाई–बहनों की तरफ से समर्पित है। सभी गुरु, भाई–बहनों को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाओं के साथ लेख को विराम देता हूं।

शेष भगवत कृपा.......
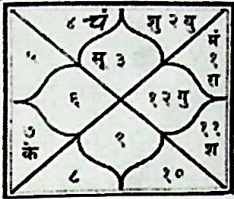
राशिफल कुण्डली
1 जुलाई, 2022 की
सूर्योदय कालीन गोचर कुण्डली

त्रैमासिक गोचर राशि फलादेश

1 जुलाई, 2022 से 30 सितम्बर, 2022 तक
(गोचर पद्धति से फलित नाम के प्रथम अक्षर से बनने वाली राशि के आधार पर मान्य)

आचार्य श्री जैनेन्द्र कटारा

ज्योतिष शास्त्र अपने आपमें एक विहंगम शास्त्र ही नहीं ज्ञान और विज्ञान का भण्डार है। जिसमें व्यक्ति के त्रिकाल ज्ञान की क्षमता होती है। **"भूतम भविष्यम वर्तमानं च प्रलक्षति"** अर्थात् ज्योतिष वह एक शाश्वत विद्या है जो भूत, भविष्य के साथ–साथ वर्तमान को भी प्रत्यक्ष देखती है और प्रत्यथ देखने के साथ–साथ उस व्यक्ति के जीवन में कब क्या हो रहा है और कब क्या होना चाहिये, उसका ज्ञान पूर्णतयाः प्राप्त किया जा सकता है।

ज्योतिष विद्या के माध्यम से हमें बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त होता है, इसमें तो कोई संदेह है ही नहीं, लेकिन वर्तमान समय में चकाचौंध की दुनिया में व्यक्ति रातोंरात कभी धनी बनते हैं तो कभी रातोंरात भिखारी भी बनते हैं। यह सब क्या है ? यह ग्रहों का जाल और ग्रहों की स्थिति है। इस लोकोक्ति का स्पष्टीकरण यह है कि जब व्यक्ति का समय अच्छा हो तब उसे तेज गति से दौड़ना चाहिये और कुछ छोटी–छोटी रिस्क भी ले लेनी चाहिये जिससे कि उसको प्रगति–उन्नति मिल सके। जैसाकि हमारे विद्धूता में कहा गया है कि **रिस्क ईज गेम, नॉ रिस्क नॉ गेम।** अर्थात् जब आपका समय अच्छा हो तो बहुत बड़ी रिस्क नहीं लेनी चाहिये, छोटी रिस्क आपको अवश्य लेनी चाहिये। उसी के विपरीत जब आपका समय पूर्णतः प्रतिकूल चल रहा हो और समय आपको साथ नहीं दे रहा है तो आप सम्भल करके रहें, रिस्क आपको बिलकुल नहीं लेनी है और अपने आपको हर दृष्टि से चौंकन्ना रखना है। जिससे सतर्कता के आधार पर हमारे जीवन में होने वाली हानि, नुकसान और व्याधियों को रोका जा सकता है।

ठीक इसी प्रकार से त्रैमासिक राशि फलादेश का उद्देश्य जब से ज्योतिष विज्ञान पत्रिका चल रही है यह धारावाहिक स्तम्भ है और सर्वाधिक प्रिय लेख है। इस लेख के अंतर्गत हम आपको तीन महीनों का स्पष्टीकरण करेंगे कि कौनसा महीना आपको अनुकूल है, कौनसा महीना प्रतिकूल है, किस महीने में आपको क्या–क्या कदम उठाने चाहिए, किस महीने में कदम नहीं उठा नहीं चाहिए। इसके साथ–साथ कुछ शास्त्रोक्त विधियों का भी वर्णन करेंगे। यद्यपि ये समस्त विधियां शास्त्रोक्त प्रमाणित है और घरेलू है। किसी भी प्रकार से इनका साइड इफेक्ट दूर–दूर तक संबंध नहीं है फिर भी आप किसी अपने गुरुजन की आज्ञा ले करके या गुरुजन के संपर्क में करेंगे तो आपको और अधिक लाभ की प्राप्ति होगी। इसी क्रम में **01 जुलाई, 2022 से 30 सितम्बर, 2022** तक की 12 राशियों का गोचर सिद्धांत के आधार पर एवं ज्योतिषी अनुभव का सम्पुट देते हुए फलादेश का विहंगम श्य लिखने जा रहा हूं। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि यह लेख मेरे समस्त प्रिय पाठकों को लाभदायक सिद्ध होगा।

मेष–राशि वालों को यह तीन महीने मिलाजुला ही फल देंगे। जिसमें भूमि, भवन

मेष राशि
(चू,चे,चो,ला,ली,ले,अ)

का लाभ प्राप्त होगा। रुका हुआ पैसा मिलेगा। घर में आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे। किन्तु मानसिक तनाव और घोर कठोर परिश्रम, व्यर्थ की चिंता भी साथ–साथ बढ़ेगी। पति–पत्नी के मध्य में अनबन अथवा स्वास्थ्य में कुछ बाधाएं उत्पन्न होगी जोकि विशेष कष्टकारक नहीं है फिर भी इस तरफ सावधानी की परम आवश्यकता रहेगी।

जुलाई–जुलाई महीना यद्यपि खुशियों की सौगात ले करके आ रहा है। इस महीने में मेष राशि वालों को धन का लाभ होगा। भूमि, भवन की प्राप्ति होगी। रुका हुआ धन मिलेगा। आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी। नाना प्रकार के सुख संसाधन, सम्पन्नता, श्रेष्ठता आपको उच्च कोटि की प्राप्त होती रहेगी, इसमें किसी भी प्रकार का कोई संदेह हो ही नहीं सकता।

अगस्त–अगस्त महीना भी खुशियों से परिपूर्ण ही रहेगा। जिसमें नवीन–प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। इस महीने में भी कुछ रुका हुआ पैसा आएगा। किंतु योजना से अधिक धन खर्च होने के कारण मन में हल्कीसी चिंता और विवाद का कारण बन सकता है, तदर्थ विशेष रुप से ध्यान दें। इस महीने मांगलिक कार्य की शुभ सूचना प्राप्त होगी, किन्तु साथ ही कोई दूरगामी अप्रिय समाचार के संकेत प्राप्त होंगे।

सितम्बर–सितम्बर महीना यद्यपि मिलाजुला है जिसमें कुछ मानसिक तनाव के साथ–साथ जीवनसाथी के स्वास्थ्य में कुछ बताएं दादा बाधा अथवा परस्पर बिना किसी कारण के विरोधाभास के कारण प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होगी अपने निकटतम प्रिय जनों से कुछ अनबन होने से भी मन में तनाव रहेगा कुछ महत्वपूर्ण कार्यों के संपादन के लिए कुछ लेने की आवश्यकता हो सकती है लेकिन घबराए नहीं क्योंकि जो भी आप ऋण लेंगे जिससे श्रेष्ठ कार्य ही होंगे किंतु रुका हुआ धन मिलना मेलजोल बढ़ना परिवार में खुशियां आना इस कारण से यह मिलाजुला यह प्रभाव रहेगा।

विशिष्ट विवेचना और उपाय–मेष राशि वालों को इन तीन महीनों में शनि और मंगल का गोचर पूर्ण अनुकूल है जबकि राहु केतु दोनों प्रतिकूल हैं और गुरु कल्याणकारी शुभ कार्य हेतु है अतः इस अवस्था में अधिक से अधिक चंदन का प्रयोग करें जैसे चंदन का परफ्यूम चंदन का ईत्र, गायों को हरा चारा डालें गुरुजनों का आशीर्वाद लें गुरुमंत्र का जाप करें और अपने विशिष्ट कार्य की सिद्धि हेतु हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें या अपने ईष्टदेव की साधना करने से यह तीन महीने अत्यधिक सुखद और श्रेष्ठाप्रद सफलताप्रद साबित होंगे।

वृषभ–वृषभ राशि वालों को यह तीन महीने मिलाजुला फल देंगे। धन की वृद्धि होगी, स्वास्थ्य में कुछ रुकावट आयेगी। कर्जे में बढ़ोतरी होगी।

वृष
(ई,उ,ए,आ,वा,वि,,बू,बे,बो)

मुकदमा में सफलता मिलेगी। नवीन, प्राचीन मित्रों से मिलन होगा एवं कुछ रुके हुए कार्य भी बनेंगे। धन सम्पदा का विशेष योग बनेगा। जीवन में खुशियां और पूर्ण सफलता मिलीजुली प्रभावशाली होगी। इन तीन महीनों में विशेष रूप से धन हानि या चोरी का सम्भावना बनी रहेगी। अतः सावधानी रखें।

जुलाई–जुलाई महीना भी मिलाजुला संकेत ले करके आ रहा है। जिसमें अपनी असावधानी से धन की हानि, व्यर्थ की परेशानी, मानसिक तनाव चिन्ता, कष्ट और बिना ।किसी कारण के आदी

व्याधियों के संकेत दिखाई पड़ रहे हैं। तदर्थ विशेष रूप से ध्यान दें। इसी क्रम में किसी अच्छे कार्य हेतु धन का व्यय होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कर्जा भी लेना पड़ सकता है। किन्तु किसी अच्छे व्यक्ति के सहयोग से यह महीना के अंत तक सफलता के संयोग प्राप्त हो जायेंगे।

अगस्त—अगस्त महीना यद्यपि खुशियों की बरसात ले करके आ रहा है। जिसमें धन की वर्षा होगी। जीवनसाथी से शुभ संकेत मिलते रहेंगे। आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे। भूमि, भवन, वाहन आदि की प्राप्ति होगी। जो मुकदमा चल रहा है उसमें सफलता की ओर अग्रसर होंगे। रुके हुए सभी कार्य बनने लगेंगे। केवलमात्र अपनी स्वयं की लापरवाही से कुछ आंशिक शारीरिक कष्टों के संकेत हैं, जैसे जुखाम, बुखार, खांसी, तदर्थ विशेष रूप से ध्यान देने का संकेत करें।

सितम्बर—सितम्बर महीना भी मिलाजुला संकेत दे रहा है। जिसमें व्यर्थ की भागदौड़, परोपकार के लिए विशेष यात्राएं, कुछ व्यर्थ का भ्रमण एवं किसी परिचित के द्वारा धोखा करने से विशेष हानि के जोग संयोग दिखाई दे रहे हैं। अतः सितम्बर माह में किसी की गारंटी ना लेवें और ना ही किसी को उधारी धन देवें। क्योंकि धन के डूबने की सम्भावना ज्यादा है। किन्तु साथ ही इस महीने में कोई दूरगामी या अपने परिवार में मंगलकारी समाचार प्राप्त होने और कारोबार में बढ़ोतरी होने से चित्त में पूर्ण प्रसन्नता और खुशी का संचार दौड़ेगा।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—इन तीन महीनों में वृषभ राशि वालों के लिए शनि, गुरु एवं शुक्र का गोचर अत्यन्त अनुकूल हैं। जबकि राहु, केतु दोनों प्रतिकूल हैं। अतः इन तीनों ग्रहों की सुखद सफलता के लिए अंग–भंग भिखारियों को भोजन करायें। हाथी को गन्ने खिलायें, श्री गणेशजी की आराधना करें। माता पिता के चरण छूवें और यथासम्भव चिड़ियां, कबूतरों को चुग्गा डालने और गायों को हरा चारा डालने से ये तीन महीने अत्यन्त सफलताप्रद और श्रेष्ठाप्रद सिद्ध होंगे।

मिथुन—राशि वालों को ये तीन महीने अत्यन्त ही सुखद, सर्वोत्तम और श्रेष्ठतम फल देने वाले होंगे। इन तीन महीनों में खुशियों के समाचार बढ़ेंगे। रुका हुआ धन आयेगा। यश की प्राप्ति होगी, सुखद अनुभूति होगी, हर दृष्टि से लाभ और यश प्राप्ति के संकेत बढ़ते चले जायेंगे। मिथुन राशि वालों को इन तीन महीनों में कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। जैसे–मुकदमों आदि में सफलता या भूमि, भवन, वाहन आदि की प्राप्ति के स्पष्ट योग हैं।

मिथुन
(क,कि,कू,घ,ड,छ,के,को,ह)

जुलाई—जुलाई महीना पूर्णतः खुशियों के साथ आ रहा है। जिसमें धन वृद्धि के साथ–साथ मांगलिक कार्य होंगे, दूरगामी धार्मिक यात्राएं होंगी। नवीन–प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। घर में मंगल कार्य भी होंगे। कुछ धार्मिक अनुष्ठान भी होंगे। प्रियजनों से मिलन होगा। घर में आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे और घर, परिवार एकत्रित होने से घर में उत्सव, सुखद मिलन के संयोग इस महीने में सुनिश्चित रूप से प्राप्त होने के साथ–साथ संतान की ओर भी यह महीना सुखद और श्रेष्ठतापूर्वक रहेगा।

अगस्त—अगस्त महीना थोड़ा मिलाजुला है। जिसमें स्वास्थ्य में थोड़ी हानि होगी। बिना योजना से धन ज्यादा खर्च होने से मन में पछतावा रहेगा, चिन्ता भी भावना बढ़ेगी। मन में तनाव

और आदी व्याधियां थोड़ीसी रहेगी। किन्तु किसी के सहयोग से व्याधियों पर नियंत्रण भी किया जा सकता है। साथ ही साथ घर में कोई मंगल कार्य होना, शुभ यात्रा होना, परिवार में मेलजोल होने के साथ–साथ कुछ सुखद समाचार इस महीने में अवश्य रूप से प्राप्त होंगे।

सितम्बर—सितम्बर महीना मिलाजुला प्रभाव देगा। किन्तु खुशियां ज्यादा होगी, कष्ट की अनुभूति कम ही रहेगी। नानाप्रकार की खुशियां होंगी। धन का लाभ होगा, यश की प्राप्ति भी होगी। किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा धोखे की सम्भावना होने से मन में खिन्नता रहेगी, तदर्थ विशेष रूप से ध्यान दें और किसी व्यर्थ के प्रपंच में न पड़ें एवं कोई भी रिस्क ना लें क्योंकि यह पूरा महीना विवादास्पद बना रहेगा।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—मिथुन राशि वालों को इन तीन महीनों में संयोग से राहु, गुरु और बुध तीनों ही पूर्ण अनुकूल है, शनि भी अच्छा फल देगा, केवलमात्र केतु का थोड़ासा विरोधाभास होने से धन के अभाव के कारण मन में चिन्ता और तनाव की सम्भावना है। अतः गायों को हरा चारा खिलाने से, माता पिता के नित्य चरण छूने से यथासम्भव चिड़ियां कबूतरों को दाना चुग्गा डालने, नियमित गुरुमंत्र का जाप करने अथवा हनुमान चालीसा का पाठ करने से ये तीनों महीनों में सुखद और श्रेष्ठता प्राप्त होगी।

कर्क—राशि वालों को यह तीन महीने अत्यन्त सुखद, सफलतम और श्रेष्ठतम फल देने वाले होंगे।

धन का लाभ होगा, नवीन कार्य और यश की वृद्धि होगी। सुखद समृद्धि और सफलता का संयोग बनेगा। परिवार में कुछ साधारण कलह एवं अपने निकटतम कार्यकत्ताओं से अथवा अपने सहकर्मियों के साथ में थोड़ीसी अनबन का कारण बनेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में बाधा और संतान की ओर से भी कुछ चिन्ता का विषय दिखाई पड़ रहा है। किन्तु इन सबके उपरांत भी कर्क राशि वालों को ये तीन महीने सुखद और श्रेष्ठतम ही सिद्ध होंगे।

जुलाई—जुलाई महीना मिलाजुला फल देगा। जिसमें अकारण धन का खर्च होगा। भूमि, भवन की प्राप्ति होगी। भौतिक सुख संसाधनों में वृद्धि होगी। अमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे। दूरगामी कोई अप्रिय समाचार भी प्राप्त होंगे। कोई विशेष प्रयोजन की सफलता की लिए ऋण लेने की आवश्यकता होगी। अतः इस समस्या के समाधान हेतु गुरुमंत्र आदि पर ध्यान देवें। जुलाई महीने के अंत में रुका हुआ पैसा आने से पुनः खुशी की लहर और सफलता का संकेत बन जायेगा।

अगस्त—अगस्त महीना यद्यपि सफलता का आधार ले करके आ रहा है। जिसमें रुका हुआ धन आयेगा। भूमि, भवन की प्राप्ति होगी। नवीन–प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। इस महीने में नये कार्यों की शुरुआत एवं मुकदमा आदि में विजय और जितने भी उलझे हुए, रुके हुए कार्य हैं वे सभी पूर्ण होंगे। सफलता और यश की प्राप्ति सुनिश्चित रूप से होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

सितम्बर—सितम्बर महीना भी मिलाजुला फल देगा। जिसमें साधारण शारीरिक पीड़ा, संतान की ओर से थोड़ासा चिन्ता का विषय, जीवनसाथी के साथ में कुछ अनबन, अपने सहकर्मी एवं परिवार में वाद–विवाद, कलह का वातावरण बनेगा। किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा धोखे की सम्भावनाओं के संकेत दिखाई दे रहे हैं। अतः विशेष ध्यान दें और इस अवधि में किसी भी प्रकार की कोई गारंटी ना देवें। साक्षी भी ना देवें। विवादों से बचे। इस महीने

के मध्य में अचानक धन आगमन से खुशी का संयोग आयेगा एवं मिलाजुला समय का संकेत प्राप्त होता रहेगा।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—कर्क राशि वालों को इन तीन महीनों में संयोग से गुरु, राहु दोनों का गोचर पूर्ण अनुकूल है। जबकि शनि और केतु पूर्णतः प्रतिकूल होने के कारण मिलाजुला समय रहेगा। फिर भी इन तीन महीनों की सुखद और श्रेष्ठतम सफलता के लिए गुरुमंत्र का जाप करें, अंग–भंग भिखारियों को भोजन करायें, गायों को हरा चारा डालें। चांदी के गिलास में पानी या दूध का सेवन करने से मन में संतुष्टि रहेगी और यथासम्भव चीनी, चावल और दूध इन तीनों का दान सोमवार के दिन करने से सुनिश्चित रूप से तीन महीने लाभप्रद ही सिद्ध होंगे।

सिंह—राशि वालों को इन तीन महीनों में अत्यन्त ही सफलता और विशेष सुखद समाचार प्राप्त होंगे। यद्यपि साधारण शारीरिक पीड़ा और कुछ योजना के विपरीत धन अधिक खर्च होने से मन में तनाव भी रहेगा। किन्तु कुछ अति आवश्यक कार्यों में सफलता मिलने, मुकदमा आदि में विजय प्राप्त होने, नये कारोबार की शुरुआत होने, प्रमोशन पद आदि की प्राप्ति होने से मन में खुशी की लहर दौड़ेगी और हर प्रकार से सफलता और श्रेष्ठता का उत्तम संयोग सुनिश्चित रूप से बना रहेगा, इसमें कोई संदेह किसी भी प्रकार का नहीं है।

जुलाई—जुलाई महीना सिंह राशि वालों को अत्यन्त लाभप्रद रहेगा। भूमि, भवन का लाभ, धन सम्पदा की प्राप्ति, यश की प्राप्ति, कीर्ति ऐश्वर्य की प्राप्ति, हर दृष्टि से सफलता मिलेगी। नवीन–प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। रुके हुए कार्य बनेंगे, घर में मंगल कार्य होंगे। नानाप्रकार की सुख समृद्धि और सफलता का संयोग सुनिश्चित रूप से बनता चला जायेगा।

अगस्त—अगस्त महीना भी खुशियों का संयोग ले करके आ रहा है। जिसमें दूरगामी यात्राएं सफलताप्रद सिद्ध होंगी। यद्यपि इस महीने में सिंह राशि वालों को कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। किन्तु फिर भी धन की प्राप्ति, यश की प्राप्ति, ऐश्वर्य की प्राप्ति और कीर्ति आदि के लाभ से जीवन में सफलताएं और श्रेष्ठताएं सुनिश्चित रूप से प्राप्त होती रहेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। किसी आवश्यक कार्य हेतु ऋण की आवश्यकता होगी, जोकि आपके हित में रहेगा।

सितम्बर—सितम्बर महीना यद्यपि मिलाजुला असर देगा। ऋण वृद्धि से मन में तनाव रहेगा। महीने के अंत में ऋण मुक्ति का संयोग भी बनेगा। कोई अप्रिय समाचार भी प्राप्त होगा। साधारण शारीरिक पीड़ा रहेगी। अपने किसी निकटतम व्यक्ति के द्वारा धोखे की सम्भावना है। हल्के–फुल्के किसी चीज की हानि या चोरी के भी संकेत बन रहे हैं, तदर्थ विशिष्ट ध्यान दें और सावधानी का संयोग अवश्य बरतें।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—सिंह राशि वालों को इन तीन महीनों में संयोग से केतु, राहु इन दोनों का गोचर पूर्ण अनुकूल है। केवलमात्र शनि की दृष्टि और अष्ठम् गुरु होने से कुछ पीड़ाएं भी बीच–बीच में सताती रहेगी। उनके निवारण हेतु पीली चीजों का दान करें। गायों को चारा खिलायें। अपने से बड़ों के चरण स्पर्श करें। गुरुमंत्र का नियमित जाप करने और यथासम्भव चीड़ियां

कबूतरों को चुग्गा डालने से ये तीनों महीने सुखद और श्रेष्ठाप्रद सिद्ध होंगे।

कन्या—कन्या राशि वालों को ये तीन महीने अत्यन्त सुखद और श्रेष्ठतम फल प्रदान करेंगे।

कन्या
(टो,प,पी,पू,ठा,ण,ठ,पे,पो)

यद्यपि आवश्यक और अनावश्यक कार्यों में धन का व्यय अधिक होगा। घोर कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। दूरगामी यात्राएं भी होंगी। नवीन–प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। भौतिक सुख साधनों में अभूतपूर्व सफलता मिलेगी। कुछ खुशी के समाचार प्राप्त होंगे, धन की प्राप्ति होगी। यश की प्राप्ति होगी। कुछ रुका हुआ पैसा आने से ऋण मुक्ति भी होगी। किन्तु साथ ही साथ अति आवश्यक कार्यों के सम्पादन हेतु ऋण लेना भी पड़ेगा जोकि आपके हितकारी भी रहेगा।

जुलाई—जुलाई महीना खुशी की बरसात का संयोग ले करके आ रहा है। धन का लाभ, भूमि, भवन का लाभ, यश का लाभ, पूर्ण कीर्ति, पूर्ण सफलता, पूर्ण सुयश आदि की प्राप्ति होगी। धन, वैभव कीर्ति बढ़ती रहेगी। हर दृष्टि से सफलता और यश की वृद्धि रहेगी। केवलमात्र किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा धोखे की सम्भावना और हल्के फुल्के स्वास्थ्य में कुछ गिरावट आयेगी। यद्यपि ऋण मुक्ति और धन की वृद्धि इन दोनों के संयोग दिखाई पड़ रही है।

अगस्त—अगस्त महीना हालांकि मिलाजुला है। फिर भी इस महीने में आमोद प्रमोद के संसाधन बढ़ेंगे। नवीन–प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। भूमि, भवन, वाहन, स्वर्ण, आभूषण आदि की प्राप्ति होगी। सुनिश्चित रूप से खुशी के समाचार मिलेंगे। जीवनसाथी के साथ में कुछ अनबन होगी। सहकर्मियों के साथ में कुछ मतभेद बना रहेगा। साधारण शारीरिक पीड़ा के साथ–साथ खुशियां भी आयेगी और इस महीने में भूमि, भवन, वाहन आदि प्राप्ति के अति प्रबल और श्रेष्ठ संयोग हैं।

सितम्बर—सितम्बर महीना पूर्ण खुशियों की बहार ले करके आ रहा है। जिसमें कल्पना से अधिक धन की प्राप्ति, किन्तु साथ ही साथ घोर कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। दूरगामी यात्राएं, घर में मंगल कार्य और उत्सवों में वृद्धि, धन वृद्धि, आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि और हर दृष्टि से खुशी और सफलता का संयोग सुनिश्चित रूप से इस महीने में प्राप्त होने से पूरे परिवार में खुशी की लहर दौड़ती रहेगी और संतान की ओर से विशेष खुशी के समाचार प्राप्त होंगे।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—कन्या राशि वालों को इन तीन महीनों में संयोग से वृहस्पति और शनि का गोचर पूर्ण अनुकूल है। जबकि राहु, केतु दोनों प्रतिकूल हैं। बुध की मेहरबानी बनी हुई है। इसलिए सफलताएं अधिक, किन्तु बीच–बीच में आदी व्याधियों का भी सामना भी करना पड़ेगा। अतः इन तीन महीनों की सुखद सफलता के लिए गायों की सेवा करें, गुरुमंत्र का अधिक से अधिक जाप करें। हनुमान चालीसा का पाठ करें और यथासम्भव अंग–भंग भिखारियों को भोजन कराते रहें जिससे ये तीन महीने पूर्ण सुखद और श्रेष्ठतापूर्वक सिद्ध होंगे।

तुला—तुला राशि वालों को यह तीन महीने मिलाजुला फल देंगे। मानसिक तनाव, चिन्ता एवं

तुला
(र,री, रू,रे,ता,ति,तू,ते)

अकारण के झिझंट–झंझटों के कारण मन में बैचेनी और अशांति होगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में बाधा होगी। बिना किसी

कारण से घर में कलह का अकारण भी होगा। इसके साथ–साथ रुका हुआ धन आयेगा। ऋण मुक्ति होगी, मुकदमों आदि में विजय होगी और हर विवाद में सफलता सुनिश्चित रूप से प्राप्त होगी।

जुलाई–जुलाई महीना मिलाजुला ही दिखाई पड़ रहा है। जिसमें अकारण के विवाद, पति–पत्नी के स्वास्थ्य में बाधा, अपने सहकर्मियों से विरोध, बिना किसी कारण से घर में अशांति का वातावरण, किन्तु रुका हुआ भी पैसा मिलेगा। धन समृद्धि की भी प्राप्ति होगी। भूमि, भवन, वाहन, स्वर्ण इन सबकी प्राप्ति होगी। इस महीने में कुछ नये कार्यों की शुरुआत भी होगी, जिससे मन में प्रसन्नता का संचार होगा।

अगस्त–अगस्त महीना खुशी की सौगात ले करके आयेगा। इस माह में धन की वृद्धि होगी, सुख समृद्धि बढ़ेगी। सफलताओं के साथ–साथ हालांकि संतान की ओर कुछ तनाव और विवाद होगा। आमोद प्रमोद के साधनों में धन अधिक खर्च होने से मन में तनाव और बैचेनी भी बढ़ेगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा। जीवनसाथी के साथ में कुछ मधुर संबंध बनेंगे, जिससे मन में खुशी होगी। दूरगामी अप्रिय समाचार के साथ–साथ इस महीने में कुछ मंगल कार्य और खुशियों की सौगात भी प्राप्त होगी। भूमि, भवन, वाहन के साधन भी इस महीने में बढ़ेंगे।

सितम्बर–सितम्बर महीना भी पुनः मिलाजुला है। जिसमें कर्ज अधिक होने से मन में तनाव बना रहेगा। गत दो महीनों में कुछ निर्णय गलत होने से मन में पछतावा रहेगा। अपने निकटतम प्रियजनों से विरोध और भूमि, भवन के विवाद अकारण के बढ़ेंगे। बिना किसी कारण के, बिना किसी योजना के धन अधिक खर्च होने से मन में पछतावा और चिन्ताएं बनी रहेगी। ऋण रोगों की मुक्ति भी होगी। कोई सक्षम और श्रेष्ठ व्यक्ति के मिलन से इस महीने के अंत में पुनः खुशियों की आशा दौड़ने लगेगी।

विशिष्ट विवेचना और उपाय–तुला राशि वालों को इन तीन महीनों में केतु, राहु और शनि इन तीनों का गोचर पूर्णतः प्रतिकूल है। केवलमात्र गुरुदेव की कृपा सकारात्मक है और शुक्र भी अच्छे हैं। इसलिए मिलाजुला फल प्राप्त होता रहेगा। अतः इन तीन महीनों की श्रेष्ठ सफलता के लिए अधिक से अधिक गुरुमंत्र का जाप करें। शनि को शांत करने के लिए छाया दान करें। राहु, केतु की शांति के लिए अंग–भंग भिखारियों को भोजन करायें और गायों को हरा चारा डालें एवं छोटे–छोटे बच्चों को फल, टॉफी बांटने से इन तीन महीनों में पूर्ण सुखद और श्रेष्ठता प्राप्त होती रहेगी।

वृश्चिक–वृश्चिक राशि वालों को ये तीन महीने सुखद और श्रेष्ठतम होंगे। यद्यपि इन तीन

महीनों में खर्चा बढ़ेगा, किन्तु कर्जा मुक्त भी होगा। पराक्रम बढ़ेगा तो कुछ विवाद भी होगा। मानसिक तनाव होंगे और खुशी भी होगी। कुछ पैसा डूबेगा तो कुछ रुका हुआ पैसा प्राप्त भी होगी। नवीन कारोबार में प्रगति और सफलता के संकेत सुनिश्चित रूप से प्राप्त होंगे।

जुलाई–जुलाई महीना एकदम सुखद समृद्धि का प्रतीक होगा। जिसमें आशा से अधिक धन आयेगा। दूरगामी धार्मिक यात्राएं होंगी। घर में मांगलिक कार्य होंगे। नवीन–प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। रुका हुआ पैसा मिलने से मन में खुशी होगी। आमोद प्रमोद के साधन बढ़ने से मन में खुशी और प्रसन्नता का अहसास सुनिश्चित

रूप से होगा। अकारण धन खर्च होने से मन में व्यथा रहेगी एवं चोरी की भी सम्भावना है, तदर्थ विशेष रूप से ध्यान दें।

अगस्त—अगस्त का महीना सुनिश्चित रूप से खुशियां ले करके आ रहा है। जिसमें आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे। नवीन—प्राचीन मित्रों से मिलन होगा। दूरगामी यात्राएं होंगी। धार्मिक कार्य और मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। यात्राएं सफल रहेगी। मुकदमों आदि में विजयश्री प्राप्त होगी एवं मन में प्रसन्नता का संचार अवश्य रूप से होगा।

सितम्बर—सितम्बर महीना कुछ मिलाजुला फल देगा। जिसमें अधिक धन खर्च होने से मन में दुविधा रहेगी। आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे। बिना किसी कारण से स्वास्थ्य में बाधा रहेगी। अकारण भागदौड़ बहुत ज्यादा करनी पड़ेगी। दूरगामी कोई अप्रिय समाचार प्राप्त होगा। किन्तु घर में मंगल कार्य, खुशी के अवसर, कुछ सुखद एवं धार्मिक यात्राओं के अति प्रबल श्रेष्ठतम संयोग बनेंगे। जिससे महीने के अंत में खुशी का संचार और नानाप्रकार की अच्छी योजनाओं की वृद्धि और श्रेष्ठता प्राप्त होगी।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—गोचर राशि सिद्धांत के अनुसार वृश्चिक राशि वालों को केतु, शनि इन दोनों को गोचर प्रतिकूल है। जबकि राहु, गुरु मेहरबान हैं। परिणामस्वरूप समय मिलाजुला रहेगा। फिर भी इन तीन महीनों की सुखद सफलता के लिए गायों को हरा चारा डालें। अंग—भंग भिखारियों को भोजन करायें। अधिक से अधिक गुरुमंत्र का जाप करें। अपनी कुलदेवी के नियमित रूप से दर्शन करें। इस अवधि दौरान कैथ नामक पेड़ की पूजा करना अति उत्तम होगा।

धनु—धनु राशि वालों को यह तीन महीने अत्यन्त सुखद और श्रेष्ठ रहेंगे। धन की वृद्धि होगी।

भूमि, भवन, वाहन की प्राप्ति होगी। लक्ष्मी की सुखद प्राप्ति होगी। नानाप्रकार के सुख और समृद्धियां प्राप्त होगी। हालांकि कलह, विवाद और अशांति अपनी जगह पर बनी रहेगी। व्यर्थ के झगड़े और कुछ शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी अड़चनें आयेगी। फिर भी आप अपनी बुद्धि—विवेक से अड़चनों को सुखद बनाकर श्रेष्ठ और सफलताप्रद लाभ प्राप्त कर सकते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

जुलाई—महीना पूर्ण खुशियों का प्रतीक है जिसमें भूमि, भवन की प्राप्ति होगी। धन सम्पदा प्राप्त होगी। वैभव की प्राप्ति होगी। यश की भी प्राप्ति होगी। नानप्रकार के सुख और समृद्धि के साथ—साथ धनु राशि वाले जातकों को जीवन में आगे बढ़ने का सुअवसर प्राप्त होगा। किसी सक्षम व्यक्ति से परिचय होने से जीवन की अच्छी योजनाएं इस महीने में बनेगी। यद्यपि खर्चा अधिक होने से मन में थोड़ा संताप रहेगा। किन्तु इस महीने के अंत में अधिक खुशी होने से मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

अगस्त—अगस्त महीना मिलाजुला है। जिसमें धन अधिक मात्रा में खर्च होने से मन व्यथित रहेगा। कुछ जल्दीबाजी में गलत निर्णय ले लेने के कारण मन व्यथित रहेगा। परिवार में कुछ आपस में तनाव और खींचमतानी होगी। लेकिन महीने के अंत तक सुखद और श्रेष्ठ सफलतम फल प्राप्त होगा।

सितम्बर—सितम्बर महीना भी मिलाजुला ही है। जिसमें नानाप्रकार के भौतिक सुख साधनों में बढ़ोतरी एवं आमोद प्रमोद के साधनों को जुटाने के

लिए धन का खर्च होगा। कर्ज में बढ़ोतरी होगी। साधारण शारीरिक पीड़ाएं भी होंगी। आपस में अपने सहकर्मियों व पड़ोसियों से कुछ विवाद बढ़ेगा। साथ ही साथ मुकदमों में विजय एवं रुका हुआ पैसा प्राप्त होने से मन में अजीब प्रसन्नता का संचार रहेगा और मन में हर दृष्टि से सफलता श्रेष्ठता और उन्नति के कदम आगे की ओर बढ़ते रहेंगे।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—धनु राशि वालों को संयोग से इन तीन महीनों में शनि, केतु दोनों का गोचर पूर्णतः अच्छा है। जबकि गुरु और राहु कुछ मिलाजुला फल दे रहे हैं। परिणामस्वरूप आदी व्याधियों के साथ सफलता मिलेगी। अतः इन तीन महीनों की सुखद सफलता के लिए हाथी को गन्ने खिलाएं, चन्दन का प्रयोग करें, केसर का तिलक नाभी और माथे पर लगायें। फिटकरी के पानी से स्नान करें। काली चीजों का दान करें और यथासम्भव गुरुमंत्र जाप के साथ–साथ घर के बुजुर्ग व्यक्तियों का विशेष मान सम्मान करने से चरण स्पर्श करने से ये तीनों महीने सुखद होंगे।

मकर—मकर राशि वालों को ये तीन महीने अत्यन्त शुभ और श्रेष्ठ फल देंगे। यद्यपि घोर कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। दूरगामी यात्राएं होंगी। आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे। योजना से अधिक धन खर्च होने से मन में तनाव और चिन्ता का संचार भी बढ़ेगा। नानाप्रकार की खुशियों के साथ–साथ कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। कुछ आर्थिक क्षति की सम्भावना है, तदर्थ विशेष रूप से चौकन्ना रहें। आपके गलत निर्णय अथवा लापरवाही से चोरी या धन की हानि की सम्भावना बनती है। जबकि मुकदमा आदि में पूर्ण विजयश्री और ऋण मुक्ति भी अवश्य होगी।

मकर
(भो,ज,जी,जू,जे,जो,ख,खि,खे,चो,ग,गी)

जुलाई—जुलाई महीना मिलाजुला फल देगा। जिसमें आमदनी से अधिक धन खर्च होगा। भागदौड़ भरपुर रहेगी। कोई साधारण शारीरिक पीड़ा भी होगी। दूरगामी यात्रा भी होगी। जीवन में खुशियों का संचार होगा। मांगलिक कार्यों व धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। धार्मिक तीर्थ यात्राओं का संयोग बनेगा। कुछ मांगलिक यात्राएं भी होंगी। घर में कोई खुशी का समाचार प्राप्त होगा एवं दूरगामी कोई अप्रिय समाचार प्राप्त होने से मन में थोड़ी खिन्नता और बैचेनी का अनुभव होगा।

अगस्त—अगस्त का महीना एक अत्यन्त खुशी की सौगात और सफलता ले करके आ रहा है। जिसमें भूमि, भवन की प्राप्ति, मुकदमा में विजय, अतुल धन धान्य की प्राप्ति के साथ–साथ विशिष्ट सफलता और सुनिश्चित इस महीने में आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे एवं खुशियां भी अधिक रहेगी।

सितम्बर—सितम्बर महीना मिलाजुला है। जिसमें घोर कठोर परिश्रम के साथ–साथ आवश्यकता से अधिक धन खर्च होगा। मन में थोड़ी बैचेनी आयेगी। बंधु बांधवों से थोड़ी अनबन होगी। स्वास्थ्य पर थोड़ा ध्यान दें। अकारण छोटी–मोटी पीड़ाएं रहेगी। मानसिक तनाव भी होगा। कोई व्यक्ति आपको कलंकित करने की चेष्टा करेगा, तदर्थ विशिष्ट ध्यान अवश्य रूप से रखें।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—मकर राशि वालों को ये तीन महीने प्रभु के संयोग से शनि की कल्याणी पंचवर्षीय गुरु पूर्ण कारक, केतु भी पूर्ण कारक, परन्तु राहु पूर्ण अकारक होने के कारण मिलाजुला फल प्राप्त होगा। यद्यपि सफलताएं ज्यादा मिलेगी। फिर भी इन तीन महीनों की सुखद सफलता के लिए ईष्टदेव का जाप करें, कुलदेवी के दर्शन करें, माता पिता का आशीर्वाद लें, गुरुमंत्र का

अधिक से अधिक जाप करें और यदि हो सके तो अपने वजन के बराबर अन्न का तुलादान अथवा अन्य खाद्य वस्तुओं का दान करने से ये तीन महीनें अत्यन्त शुभ होंगे और यथासम्भव हनुमान चालीसा का पाठ करते रहेंगे तो और भी ज्यादा लाभप्रद होगा।

कुम्भ—कुम्भ राशि वालों को ये तीन महीने अत्यन्त सुखद, सफलता और प्रगति सूचक होंगे।

कुम्भ
(गु,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,द)

पराक्रम बढ़ेगा, धन की वृद्धि होगी। यद्यपि स्वभाव में चिड़चिड़ापन और आलस का संचार होगा। फिर भी इन तीन महीनों में अपनी प्रसिद्धि का ग्राफ बढ़ेगा। मानसिक शांति होगी। सुख समृद्धि भी प्राप्त होगी। ऐश्वर्य आदि की भी प्राप्ति होगी। भूमि, भवन, वाहन, स्वर्ण, आभूषण भी प्राप्त होंगे। किन्तु आमोद प्रमोद की तरफ अधिक ध्यान देने से व्यापार का दृष्टिकोण और अपनी निजी वृत्ति आदि क्षेत्रों में कुछ चिन्ता का विषय भी उत्पन्न होगा।

जुलाई—जुलाई महीना यद्यपि मिलाजुला है। किन्तु खुशियों के समाचार अवश्य रूप से प्राप्त होंगे। भूमि, भवन, वाहन की प्राप्ति होगी। मुकदमों में सफलता प्राप्त होगी। नानाप्रकार की प्रसिद्धि के कार्य बनेंगे। अनेक परिवारों में धार्मिक और मांगलिक समारोह में मिलन होगा। भूमि, भवन, वाहन आदि की प्राप्ति होने से मन में प्रसन्नता होगी। संतान की ओर से पूर्ण खुशी का समाचार प्राप्त होगा। अपना पद प्रमोशन बढ़ने या आमदनी के कुछ संयोग बढ़ने से मन में अत्यधिक प्रसन्नता और खुशी का समाचार सुनिश्चित रूप से होगा।

अगस्त—अगस्त महीना भी संयोग से अत्यन्त सुखी और सफलताप्रद है। जिसमें भूमि, भवन की प्राप्ति, नानाप्रकार के भौतिक सुख संसाधनों में बढ़ोतरी, गाड़ी वगैरह एवं घर में मांगलिक कार्य, धार्मिक कार्य और खुशी का समाचार अचानक प्राप्त होने से मन में अति प्रसन्नता का संचार होगा। हालांकि इस महीने में भी कोई दूरगामी अप्रिय समाचार भी प्राप्त होगा। किन्तु घर में मांगलिक और धार्मिक कार्यों की प्रभुता होने से प्रसन्नता रहेगी।

सितम्बर—सितम्बर महीना कुछ मिलाजुला संकेत दे रहा है। चूंकि गत दो महीनों में धन अधिक खर्च होने से इस सितम्बर महीने में मन में थोड़ा पछतावा रहेगा। कुछ व्यर्थ की भागदौड़ भी होगी। जीवनसाथी के स्वास्थ्य में बाधा और घर में सामान्यतया कुछ कलह और विवाद का कारण दिखाई पड़ रहा है। किन्तु महीने के अंत में खुशी का संचार और घर में कोई मांगलिक कार्य की आवृत्ति होने से मन में प्रसन्नता का संचार बढ़ जायेगा।

विशिष्ट विवेचना और उपाय—कुम्भ राशि वालों को संयोग से इन तीन महीनों में शनि का कल्याणी पंचवर्षीय, गुरु पूर्ण मेहरबान और राहु पहलवान और केतु भी कारक होने से मन में प्रसन्नता का संचार दौड़ेगा। फिर भी इन तीन महीनों की सुखद सफलता के लिए गायों को हरा चारा डालें, गुरुमंत्र का जाप करें, राम नाम लिखें, तुलसी के पौधों पर जल चढ़ायें। अन्य फूल पत्तियों वाले प्राकृतिक वृक्षों की सेवा करने से मन में प्रसन्नता होगी।

मीन—मीन राशि वालों को ये तीन महीने मिलाजुला फल देंगे। हालांकि मन में खुशी होगी। किन्तु साथ ही साथ कलह भी होगा। अकारण गलत निर्णय लेने से समाज में, परिवार में विरोध होगा। मानसिक चिन्ता बढ़ेगी।

जीवनसाथी के साथ में अनबन और बच्चों की ओर से भी कुछ चिन्ता का कारण भी बनेगा। साथ ही साथ आमदनी के साधन बढ़ेंगे। भूमि, भवन, वाहन की प्राप्ति होगी। घर में कुछ असैट्स एवं भौतिक सुख साधनों में बढ़ोतरी होगी। निजी भवन प्राप्ति के प्रबल योग है अथवा अन्य कारणों से सम्पति में वृद्धि होगी और खुशी के समाचार प्राप्त होंगे। किन्तु मध्य–मध्य में स्वास्थ्य संबंधी बाधा रहेगी।

जुलाई–जुलाई महीना अत्यन्त सुखद सफलता का प्रतीक होगा। यद्यपि इस महीने में भी आर्थिक क्षति और भागदौड़ ज्यादा होगी। व्यर्थ का परिश्रम करना पड़ेगा, मानसिक तनाव भी होगा। जीवनसाथी के साथ में अनबन और संतान की ओर से चिन्ता का विषय बढ़ेगा। किन्तु किसी सक्षम व्यक्ति की राय और सलाह के इस महीने के अंत में सुखदा और श्रेष्ठता की ओर परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है।

अगस्त–अगस्त महीना खुशियों की बहार ले करके आ रहा है। जिसमें भूमि, भवन, वाहन की प्राप्ति, सुख समृद्धि की प्राप्ति, परिवार व समाज में वाहवाही होगी और कुछ अलग स्थानों पर सामाजिक समारोह में सम्मान को प्राप्त करेंगे। दूरगामी यात्रा होंगी। मानसिक तनाव अधिक होने से कभी–कभी बैचेनी का अनुभव करेंगे। किन्तु यह सुखद और श्रेष्ठतम योजना बनती रहेगी और उस योजना के सहारे अच्छा फल प्रदान करने वाला यह अगस्त महीना होगा।

सितम्बर–सितम्बर महीना और भी खुशियों का प्रतीक दे रहा है। यद्यपि इसमें आर्थिक क्षति होने से मन में बैचेनी व चिन्ता बढ़ेगी, किन्तु भूमि, भवन, वाहन की प्राप्ति. होगी। मुकदमा आदि में विजय, सफलता प्राप्त होगी। आमोद प्रमोद के साधन बढ़ेंगे। भौतिक सुख संसाधन बढ़ेंगे। घर में भूमि, भवन, वाहन आदि के प्राप्ति योग हैं। मांगलिक कार्य अवश्य होंगे। शुभ कार्य भी विशेषता रूप से दिखाई पड़ने के साथ–साथ इस महीने में एक विशेष योजना अथवा व्यापार में धमाकेदार सफलता प्राप्त होने से मन में प्रसन्नता का संचार होगा।

विशिष्ट विवेचना और उपाय–मीन राशि वालों को इन तीन महीनों में शनि, शुक्र और बुध तीनों कारक हैं। जबकि केतु, राहु अकारक होने के कारण कुछ अशांति का वातावरण हो सकता है। उसकी निवृत्ति के लिए हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें। चांदी के गिलास में पानी और दूध पीयें। गुरुमंत्र का जाप करने व हनुमान चालीसा का पाठ करने से मन में अत्यन्त खुशी के साथ–साथ ये तीन महीने सुखदपूर्ण रहेंगे।

शेष भगवत कृपा..........

(1) राशि फलादेश में दिये गये उपाय यद्यपि सरल और शास्त्रोक्त हैं। इनके करने से किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती है। फिर भी उचित रहेगा कि किसी श्रेष्ठ और विद्वान पंडित से सलाह मशवरा कर लेवें।

(2) विशेष सावधानी–सड़कों और गलियों में वाहन आदि तेज रफ्तार से चल रहे हैं एवं बढ़ भी रहे हैं। इसलिए सड़क रास्ते से पैदल या किसी वाहन से जाते वक्त विशेष सावधानी रखते हुए अपने वाहन को नियंत्रित व धीमी गति से चलायें।

व्यासपीठासीन
आचार्य जैनेन्द्र कटाराजी

श्री हरसुमनराय चन्द्रशंकर रावल (गटुभाई)
श्रीमती जयशिला हरसुमनराय रावल

चि. यतिन ह. रावल सपरिवार

श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ

का दिव्य आयोजन

(बुधवार, दिनांक 17 अगस्त, 2022 से मंगलवार, 23 अगस्त, 2022 तक)

(समयः प्रातः 10:00 बजे से 2:00 बजे तक)

कथा स्थल : दी लैटीट्यूट होटल, भूपतवाला, हरिद्वार
The Hotel Latitude, Bhupatwala, Haridwar

मुख्य यजमान एवं आदित्य ज्योतिष शोध के तत्वावधान में भागवत सेवा समिति द्वारा जगत का कल्याण करने वाली कलयुग में सर्वोत्तम **भागवत महाज्ञान यज्ञ** का आयोजन अपने **पूर्वजों की स्मृति** में एवं **माता पिता के विवाह की 50वीं वर्षगांठ (गोल्डन जुबली)** के पावन पुनित अवसर पर हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में होने जा रहा है। जिसमें **व्यासपीठासीन आचार्य श्री जैनेन्द्र कटाराजी** अपनी अमृतमय वाणी द्वारा भावपूर्ण कथा से सबको ज्ञान एवं आनन्द की वर्षा करेंगे।

हरिद्वार स्थित गंगा जैसी पावन पवित्र नगरी में हमारे पूर्वजों की प्रेरणा और अनेक जन्मों के पुण्योदय होने से भागवत कथा का आयोजन हो रहा है।

अपने पूर्वजों की तृप्ति के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए, सकल सिद्धि के लिए मैं आप सभी से करबद्ध आग्रह कर रहा हूं कि सभी लोग यहां पधारें, भागवत कथा का आनन्द लेवें और इस पुण्य अवसर का आप सभी सनातन धर्म प्रेमी लाभ उठायें।

नावकाशः कदाचिद् दिनमात्रं तथातिश।
सर्वथा गमनं कार्य क्षणम् त्रैव सुदुर्लभः।।

भागवतम् में स्पष्ट लिखा है कि आपको अगर सात दिन का टाइम है, आप सादर आमंत्रित हैं। अगर सात दिन का टाइम नहीं है तो आप जितना टाइम निकाल सके, उतना आपके लिए सौभाग्य का दिन होगा, क्योंकि भागवत कथा में एक–एक क्षण दुर्लभ है।

मुख्य यजमान आयोजन कर्ता :

श्री हरसुमनराय चन्द्रशंकर रावल (गटुभाई)
श्रीमती जयशिला हरसुमनराय रावल

चि. यतिन ह. रावल
सौ. मनीषा य. रावल

सम्पर्क सूत्र :

चि. यतिन ह. रावल (गुजराती) +91 9566342922, +91 8667851036
आचार्य श्री जैनेन्द्र कटारा 9414052690 एवं 9829055120
सचिन भाई गोयल, हरिद्वार मो. 9897691111, शंकर मोदी सह व्यवस्थापक मो. 9414014256
राजेन्द्र गोहिल मो. 9828019020

RNI No. 64820/96

व्यासपीठासीन आचार्य श्री जैनेन्द्र कटारा

॥श्री गणेशाय नमः॥

''श्री कृष्णः शरणम् मम्''

श्रीमद्भागवत सप्ताह परायण ज्ञानयज्ञ
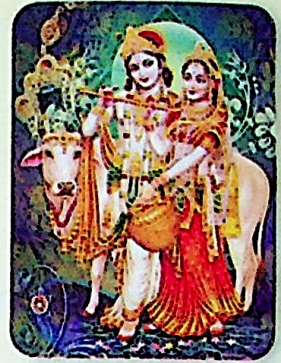
''श्री कृष्णः शरणम् मम्''

दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 से 31 दिसम्बर, 2022 तक

आदित्य ज्योतिष शोध संस्थान के तत्त्वावधान में श्री भागवत सेवा समिति द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष (2022) में जगत कल्याण व विश्व शांति हेतु व्यासपीठासीन परम् श्रद्धेय आचार्य श्री जैनेन्द्र कटारा अपने श्रीमुख से श्री कृष्ण चरितामृत कथा का रसपान करायेंगे।

गुरु पूर्णिमा दीक्षा समारोह

बुधवार, दिनांक 13 जुलाई, 2022

संस्थान परिसर में अमृतप्रसादी एवं दिव्य दीक्षा पूरे दिन

समय - प्रातः 7.00 बजे से .....

108 कुण्डीय लक्ष्मी प्राप्ति, ऋणमुक्ति हवन यज्ञ

रविवार, दिनांक 27 नवम्बर, 2022

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ प्राप्त करने के लिए

आदित्य ज्योतिष शोध संस्थान के तत्त्वावधान में

ज्योतिष विज्ञान पत्रिका सम्पादक मण्डल द्वारा आयोजित

समय - प्रातः 9.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक

स्थान : **श्रीभागवत धाम**, आजाद नगर, टोंक रोड़, जयपुर

पंद्रहवीं ब्रज यात्रा महोत्सव

दिनांक 10 दिसम्बर, 2022 से 17 दिसम्बर, 2022 तक

भागवत धाम जयपुर में निःशुल्क चिकित्सा शिविर

रविवार दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 को प्रातः 10.00 बजे से 2.00 बजे तक

अधिक जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें :

मो. 9829055120, 9414052690, 9530142402 फोन नं.: 0141-2790810

स्वत्वाधिकार प्रकाशक, मुद्रक : आचार्य जैनेन्द्र कटारा द्वारा जुब्ली आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित कराकर 44, आजाद नगर, टोंक रोड, जयपुर से प्रकाशित फोन : 2792111, 2790810